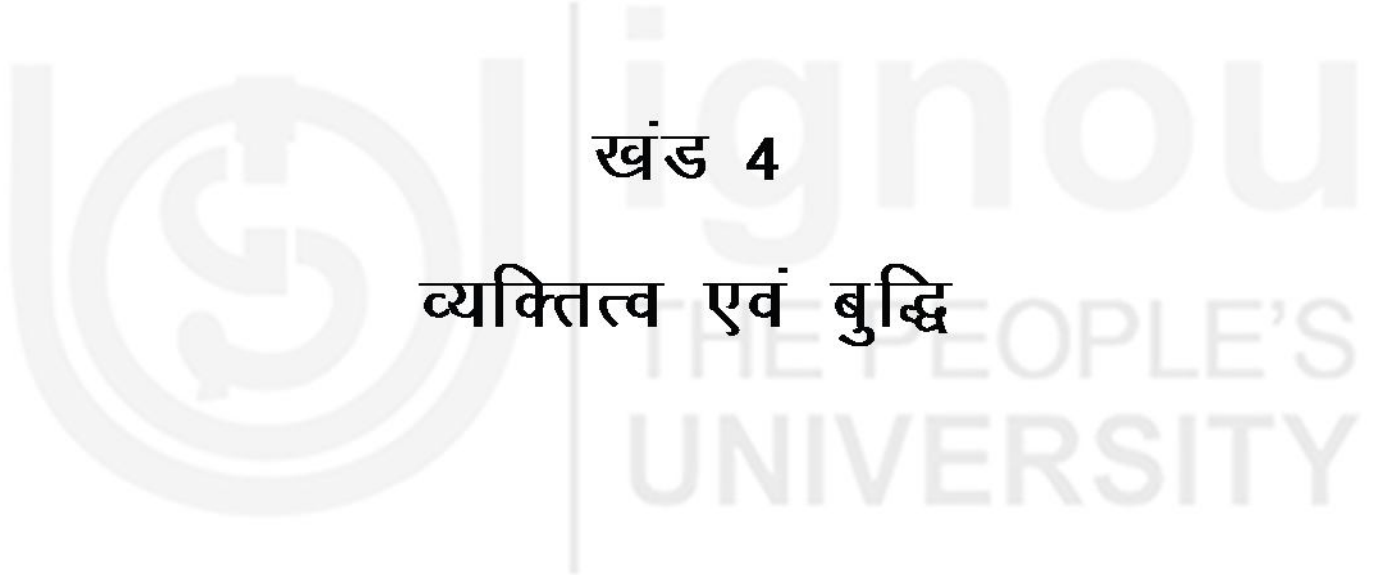


खंड 4

व्यक्तित्व एवं बुद्धि



इकाई 7 व्यक्तित्व*

रूपरेखा

- 7.0 सीखने का उद्देश्य
- 7.1 प्रस्तावना
- 7.2 व्यक्तित्व की परिभाषा एवं प्रकृति
- 7.3 व्यक्तित्व के सिद्धान्त
 - 7.3.1 फ्रायड का व्यक्तित्व सम्बन्धी सिद्धान्त
 - 7.3.1.1 नव-फ्रायडवादी : फ्रायड के अनुयायी तथा विरोधी आलोचक
 - 7.3.2 व्यक्तित्व का व्यवहारवादी उपागम
 - 7.3.3 व्यक्तित्व का मानवतावादी उपागम
 - 7.3.4 व्यक्तित्व के लक्षणात्मक सिद्धान्त
 - 7.3.4.1 आलपोर्ट का लक्षणात्मक सिद्धान्त
 - 7.3.4.2 कैटेल का लक्षणात्मक सिद्धान्त
 - 7.3.4.3 आइजेक का लक्षणात्मक सिद्धान्त
 - 7.3.4.4 मैकरे तथा कोस्टा का पंच घटकीय सिद्धान्त
 - 7.3.5 व्यक्तित्व की भारतीय अवधारणा
- 7.4 व्यक्तित्व मापन
 - 7.4.1 कागज और पैनसिल परीक्षण
 - 7.4.2 प्रक्षेपीय तकनीक
- 7.5 सारांश
- 7.6 मुख्य शब्द
- 7.7 पुनरावलोकन प्रश्न
- 7.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 7.9 चित्रों का संदर्भ
- 7.10 ऑनलाइन स्रोत

7.0 सीखने के उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप इस योग्य होंगे कि,

- व्यक्तित्व को परिभाषित कर सकें;
- व्यक्तित्व की प्रकृति को जान सकें;
- व्यक्तित्व के विभिन्न सिद्धान्तों की तुलना तथा निष्कर्ष कर सकें; तथा
- व्यक्तित्व के मूल्यांकन की विभिन्न विधियों का वर्णन कर सकें।

* डॉ. आरती सिंह, इग्नू नई दिल्ली एवं डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

7.1 प्रस्तावना

लोगों के बीच व्यक्तित्व पर प्रायः चर्चाएँ होती रही हैं। फिर भी व्यक्तित्व की एक सुनिश्चित परिभाषा तय करना तथा उसकी प्रकृति को समझना और समझाना मनोवैज्ञानिकों के लिए सदैव एक चुनौती पूर्ण कार्य रहा है। जब हम यह कहते हैं कि “वह एक अच्छी डॉक्टर है” अथवा “मैं वास्तव में एम.एस. धोनी को पसंद करता हूँ”। तब क्या हम सही अर्थों में उस डॉक्टर के चिकित्सा संबंधी ज्ञान तथा अनुभवों के बारे में पूरी तरह जान गए होते हैं? क्या आप एम.एस. धोनी को इसलिए पसंद करते हो कि वह एक बहुत अच्छा खिलाड़ी है या फिर वह अपनी टीम का नेतृत्व बहुत अच्छी तरह से करता है, या फिर उसके व्यावहारिक दृष्टिकोण से आप प्रभावित हैं। क्या हम किसी के व्यक्तित्व को ठीक से परिभाषित कर पाते हैं? किसी के व्यक्तित्व को हम सही अर्थों में किस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं?

पर्सनाल्टी शब्द लैटिन भाषा के शब्द ‘परसोना’ से लिया गया है। रोमन थियेटर में काम करने वाले कलाकार जो मुखौटा लगाकर अभिनय करते थे उसे ‘परसोना’ कहा जाता था। जैसे-जैसे किरदार बदलते थे वैसे ही मुखौटे भी बदल जाया करते थे। इस आधार पर पर्सनाल्टी का मतलब है ‘परसोना’ का लगातार बदलते जाना। हम मनुष्यों का व्यवहार स्थिर नहीं होता। वह सदैव बदलता रहता है। इसीलिए किसी के व्यवहार के बारे में पहले से कुछ नहीं कहा जा सकता। कभी-कभी हम उसी तरह का व्यवहार करते हैं जैसी हमसे अपेक्षा की जाती है परन्तु कभी-कभी हम उससे थोड़ा हटकर भी व्यवहार करने लग जाते हैं। इतना ही नहीं कभी-कभी हमारा व्यवहार इतना बदल जाता है कि जैसा लोगों ने हमारे बारे में सोचा था उससे हम बिल्कुल अलग लगते हैं। हमारा व्यवहार सदा बदलता रहता है फिर भी उसका एक स्वरूप होता है। व्यक्तित्व की अवधारणा को लेकर कुल मिलाकर व्यापक रूप से भ्रम की स्थिति बनी हुई है। अतः यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व किसी व्यक्ति की खासियत होती है और उसका व्यवहार अपेक्षाकृत रूप से एक तरह का होता है। जिनपर उसके विचार और भावनाओं का प्रभाव पड़ता है (नेल्सन तथा मिलर 1995, जुकरमैन, 1995)। इस इकाई में हम व्यक्तित्व की परिभाषा, व्यक्तित्व की प्रकृति और उसके विभिन्न सिद्धान्तों पर विचार करेंगे। हम व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक आयाम पर भी विचार करेंगे।

7.2 व्यक्तित्व की परिभाषा एवं प्रकृति

किसी व्यक्ति की वे विशेषताएँ जिनके आधार पर उसके चरित्र को सुनिश्चित किया जा सकता है, उसका व्यक्तित्व कहलाता है। इसके लिए हमें यह देखना होगा कि वे कौन-सी चीजें हैं जिनकी वजह से व्यक्ति एक जैसे लगते हैं अथवा अलग-अलग लगते हैं। अमेरिकन मनोवैज्ञानिक एसोसियेशन के अनुसार “किसी व्यक्ति के सोचने, महसूस करने, तथा व्यवहार करने के जो खास ढंग होते हैं वे ही उस व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं” तथा “व्यक्तित्व का अध्ययन दो आधारों पर किया जा सकता है, एक, किसी विशेष संदर्भ में व्यक्ति के व्यवहार में आने वाले परिवर्तन जैसे वह व्यक्ति सामाजिक है या समाज से चिढ़ता है तथा दूसरा है उसके विभिन्न अंग मिलकर किस प्रकार कार्य करते हैं। व्यक्तित्व को इस बात से भी समझा जा सकता है कि उसकी ऐसी विशेषताएँ क्या हैं जो खास परिस्थितियों में खास ढंग से बदल जाती हैं” (शुल्टज एंड शुल्टज, 2013, पृष्ठ 8)

हर व्यक्ति में कुछ खास विशेषताएँ होती हैं जिनके आधार पर वह व्यक्ति दूसरों के साथ व्यवहार करता है। वह कैसे बोलता है और कैसे व्यवहार करता है, यह सब उसके व्यक्तित्व के अंतर्गत ही आता है और विभिन्न परिस्थितियों में लोग जिस तरह का व्यवहार करते हैं, वही उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ समझी जाती हैं। इन विशेषताओं के आधार पर हम अनुमान लगा सकते हैं कि किन परिस्थितियों में वह व्यक्ति कैसा व्यवहार करेगा, इस प्रकार उसके व्यवहार करने के तरीकों से उसके व्यक्तित्व का पता लगता है। किसी व्यक्ति के

व्यक्तित्व की विशेषताएँ विचारों, भावनाओं तथा व्यवहारों से निर्धारित की जा सकती हैं। किसी व्यक्ति का समय का पाबंद होना, जिम्मेदार होना, ईमानदार होना, प्रतिभाशाली तथा विवेकी होना, उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं की व्याख्या करता है।

व्यक्तित्व की विशेषताओं के आधार पर यह पता लगाया जा सकता है कि वह व्यक्ति 'अंतर्मुखी' है या 'बहिर्मुखी'। उसमें, नेतृत्व के गुण हैं या नहीं। लोगों को सामान्य विशेषताओं के आधार पर उनका वर्गीकरण किया जा सकता है तथा उनके व्यवहार के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है। संदर्भ यह है कि किसी व्यक्ति की विशेषताओं का पता कैसे लगाया जाय, और यदि लगा लिया गया है तो उस व्यक्ति में वे विशेषतायें कब तक टिकी रहेंगी यह कैसे जाना जाये। ऐसी स्थिति में मनुष्य के अन्दर की ऐसी विशेषताओं का पता लगाना बहुत कठिन होता है जो उसके व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती हैं, परन्तु एक बात तय है कि मनुष्य का व्यवहार उसके चरित्र में निहित स्थायी विशेषताओं जैसा ही होता है और इन्हीं के आधार पर व्यक्ति के व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता है। इस अवधारणा को अन्योन्य क्रियावादी अवधारणा (Interactionist Perspective) कहा जाता है। इस अवधारणा को प्रायः सभी मनोवैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है।

7.3 व्यक्तित्व के सिद्धान्त

व्यक्तित्व के बारे में आरम्भ में जो सिद्धान्त सामने आए वे शारीरिक संरचना पर आधारित हुआ करते थे। जर्मनी के चिकित्सक फ्रेंज जोसफ गॉल (1758-1828) के विचार से व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसकी खोपड़ी के उभार से मापा जा सकता है। जिसे मस्तिष्क विज्ञान कहा जाता था। विलियम हारवर्ट शैल्डन (1898-1977) के अनुसार व्यक्तित्व का निश्चयन व्यक्ति के शरीर की आकृति से किया जा सकता है। जैसे कोई व्यक्ति दुबला-पतला है या लम्बा-चौड़ा भरे हुए शरीर वाला है, या फिर हृष्ट-पुष्ट और मजबूत मांसपेशियों वाला है। दुबले-पतले व्यक्ति को कृशकाय कहा जाएगा तथा लम्बे-चौड़े और भारी-भरकम शरीर वाले को अन्तः आकृतिक कहा जाएगा तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले व्यक्ति को मध्यकाय कहा जायेगा। व्यक्तित्व के निश्चयन की इस विधि को देह विज्ञान कहा जाता था।

लेकिन समय के साथ-साथ व्यक्तित्व के बारे में धारणाएँ बदलती चली गईं। शरीर विज्ञान और शारीरिक संरचना के आधार पर व्यक्तित्व के आंकलन का तरीका गैर-वैज्ञानिक ही माना गया। आधुनिक मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक आधार पर व्यक्तित्व का आंकलन करते हैं। वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक आधार पर व्यक्तित्व की व्याख्या करने के लिए नए परिप्रेक्ष्य सामने रखें। इस भाग में व्यक्तित्व के प्रमुख सिद्धांत की व्याख्याएं की गई हैं :

7.3.1 फ्रायड का व्यक्तित्व सिद्धान्त

सिंगमंड फ्रायड एक चिकित्सक थे। उन्होंने व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त को जन्म दिया। उनके दिमाग में यह सिद्धान्त तब आया जब वे अपने क्लीनिक में रोगियों का इलाज कर रहे थे। फ्रायड के सिद्धान्त के अनुसार अचेतन मन की प्रविधियाँ प्रमुख रूप से कार्य करती हैं। मनुष्य का व्यक्तित्व और उसका व्यवहार उन इच्छाओं, आवश्यकताओं तथा मनोविकारों से संबंधित होते हैं, जिनके बारे में प्रायः मनुष्यों को जानकारी नहीं होती। फ्रायड के अनुसार मनुष्य का आक्रमक व्यवहार तथा कामवासनाएँ जैसे तथ्य उसके व्यक्तित्व के निर्माण में विशेष रूप से योगदान देते हैं।

हमारा दिमाग किस तरह कार्य करता है, इसके लिए फ्रायड ने बताया कि,

- दिमाग का स्थलाकृतिक मॉडल यह होता है कि मस्तिष्क किस प्रकार बना है और उसकी व्यवस्था क्या होती है।

- हमारे व्यक्तित्व का संरचनात्मक मॉडल।
- विकास की मनोसामाजिक अवस्थाएँ।

दिमाग का स्थलाकृतिक मॉडल

फ्रायड के अनुसार दिमाग को तीन भागों में बांटा जा सकता है चेतन मन, अवचेतनमन तथा अचेतन मन। फ्रायड ने अपने इस विचार की व्याख्या एक लेख में की थी जो “द सायकोपैथोलॉजी ऑफ एवरी डे लाइफ” नामक पत्रिका में 1901 में प्रकाशित हुआ था। फ्रायड के अनुसार हमारा चेतन मन सामाजिक सूचनाएँ ग्रहण करता है। इनमें तरह-तरह के विचार भावनाएँ और गति विधियाँ होती हैं जिनकी खबर हर समय चेतन मन को होती है। अग्रचेतन मन अथवा अवचेतन मन उन सूचनाओं तथा भावनाओं से भरा रहता है जिनकी जानकारी मनुष्य को नहीं होती लेकिन यदि मनुष्य ध्यान दे तो उसे पता लग जाता है कि उसके अवचेतन मन में क्या हैं। मन का तीसरा स्तर अचेतन मन कहलाता है। मन के इस हिस्से में सामाजिक कुंठाएँ, इच्छाएँ तथा वे सब मनोविकार भरे रहते हैं जो मनुष्य के बिल्कुल निजी होते हैं और प्रायः समाज में जिनके लिए स्वीकृति नहीं मिलती। इन कुंठाओं की जानकारी उस मनुष्य को भी नहीं होती जिसके मन में ये कुंठाएँ छिपी रहती हैं। फ्रायड का यह मानना है कि हम अपने जीवन में जितने भी काम करते हैं उन सब में अचेतन मन में अंतर्निहित ये कुंठाएँ और वासनाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

हमारे व्यक्तित्व का संरचनात्मक मॉडल

फ्रायड के अनुसार मनुष्य का व्यक्तित्व तीन अवयवों से बनता है। ये हैं इड, अहं तथा पराहम। यहां यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इड, अहं और पराहम इन तीनों अवयवों की कोई भौतिक संरचना अथवा आकृति नहीं होती परन्तु इनका अस्तित्व होता है।

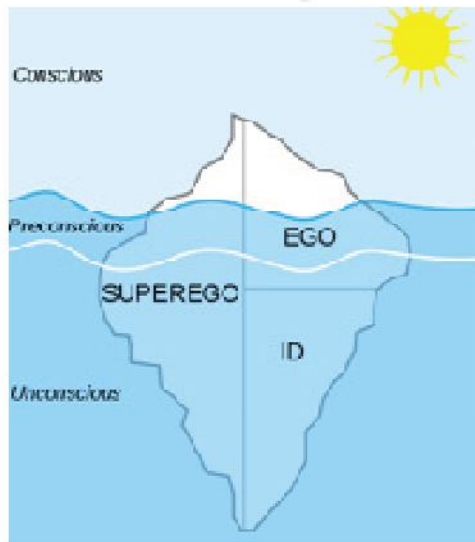
इड: मनुष्य के व्यक्तित्व का यह भाग अचेतन अवस्था में काम करता है। यह जिन आधारभूत घटकों से संचालित होता है, वे हैं मौलिक प्रवृत्तियाँ, शारीरिक आवश्यकताएँ तथा आक्रामक आवेग। पहचान की प्रवृत्ति मनुष्य में जन्म से ही मौजूद रहती है तथा यह पीढ़ी-दर पीढ़ी मनुष्य के अस्तित्व के आरंभ से ही चली आ रही है। पहचान की प्रवृत्ति मनुष्य की मौलिक प्रवृत्ति होती है। इसी प्रवृत्ति से बाद में अहं और पराहम का विकास होता है। इड की प्रवृत्ति की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह सदैव आनंद की खोज में रहती है, इसे कोई चुभन या दर्द अच्छा नहीं लगता और हमेशा सुख ही खोजती रहती है। एक और इसकी विशेषता होती है कि जो मन में आया ये वो तुरंत मिले चाहे उससे सामाजिक नियम टूटते हों या नैतिक मूल्य और चाहे किसी को व्यक्तित्व रूप से ठेस पहुँचती हो। इस प्रवृत्ति में दो प्रकार की वासनाएँ मूल रूप से काम करती हैं। एक कामवासना और दूसरी मृत्यु का अहसास। इन्हें ग्रीक मिथक में ‘इरोज’ तथा ‘थानाटॉस’ कहा जाता है। इरोज का अर्थ है प्यार का देवता तथा थानाटॉस का अर्थ है मृत्यु का देवता। फ्रायड के अनुसार काम जीवनी शक्ति है। हमारे जीवित रहने तथा जीवन में क्रियाशील रहने के पीछे यही शक्ति काम करती है। काम नामक इस जीवनी शक्ति में तीन प्रवृत्तियाँ विशेष रूप से अंतर्निहित रहती हैं कामवासना, अपनी नस्ल को आगे बढ़ाने की इच्छा और दुःखों से दूर भागने की प्रवृत्ति। काम नामक जीवनी शक्ति की ठीक विरोधी शक्ति होती है, मृत्यु की शक्ति। भौतिकी शक्ति के अथवा प्रवृत्ति के अंतर्गत सभी नकारात्मक प्रवृत्तियाँ समाहित होती हैं। जैसे- हिंसा, क्रोध, घृणा, आदि। मृत्यु का देवता, थानाटॉस कामवासना की शक्ति को संतुलित करने के लिये मनुष्य को धीरे-धीरे मृत्यु अथवा विनाश की ओर ले जाता है। जब किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में पहचान की प्रवृत्ति अत्यधिक तीव्र होती है तो वह व्यक्ति अत्यधिक गति और रुचि से काम करता है। ऐसे व्यक्ति जुनूनी होते हैं, जो उनके मन में आता है, उसे करने के लिए वे किसी बात की परवाह किए बिना बच्चे की तरह जुट जाते हैं। वे देश काल और परिस्थिति की सीमा भी नहीं मानते।

अहं : अहं मनुष्य के व्यक्तित्व का वह हिस्सा है जो वास्तविकता के सिद्धान्त पर काम करता है। मनुष्य के व्यक्तित्व का मन मानी करने वाला हिस्से पर वह नियंत्रण रखता है और तब तक उसे इच्छा की पूर्ति नहीं करने देता जब तक कि वह उचित न हो। उदाहरण के लिये

एक दस साल का बच्चा फ्रिज में रखी हुई आइसक्रीम खाना चाहता है। लेकिन बच्चे को आइसक्रीम खाने से पहले माता-पिता से पूछना पड़ता है और यदि वे बिना पूछे आइसक्रीम ले ले तो माता-पिता उसे सजा दे सकते हैं। ठीक इसी प्रकार अहं मनुष्य को चाहे जो करने से रोकता है।

अहं का जन्म मूलतः पहचान से ही होता है परन्तु इसका मुख्य उद्देश्य होता है मनुष्य को वही करने देना जो उचित है। इस प्रकार अहं तर्क के आधार पर कार्य करता है। फ्रायड के शब्दों में “अहं पहचान का वही हिस्सा है जो विश्व की वास्तविकताओं से पूरी तरह से अवगत होता है” (फ्रायड, 1923)। यदि अहंकार मनुष्य की अतिवादी प्रवृत्तियों पर रोक न लगाए तो व्यक्ति के अंदर उत्तेजना और तनाव की स्थिति पैदा हो जाती है। इस तनाव और उत्तेजना पर नियंत्रण रखने के लिए व्यक्ति को अचेतन मन की सुरक्षा व्यवस्था का सहारा लेना पड़ता है।

पराहम : यह हमारे व्यक्तित्व का नैतिक पक्ष होता है। पराहम के कारण मनुष्य, समाज के नैतिक मूल्यों तथा अनुशासनों को, सामाजिकता द्वारा सीखता है। पराहम मनुष्य को विभिन्न परिस्थितियों में सही व्यवहार करना सिखाता है। पराहम का विकास बच्चे में तीन से पांच वर्ष की आयु के बीच हो जाता है। इसका उपयुक्त उदाहरण दस साल का वह बच्चा है जो फ्रिज में रखी आइसक्रीम खाना तो चाहता है परन्तु, ऐसा करने से पहले माता-पिता से अनुमति लेना अपना नैतिक कर्तव्य मानता है। फ्रायड के अनुसार पराहम में दो प्रणालियां काम करती हैं। एक, समझ या विवेक और दूसरी आदर्श। स्व-विवेक का काम अहं को दंभित अथवा पुरस्कृत करना होता है। जब वह अहं को दण्डित करता है तो मनुष्य में अपराध बोध आ जाता है और जब वह पुरस्कृत करता है तो मनुष्य में घमण्ड पैदा हो जाता है। उदाहरण के लिये, यदि कोई मनुष्य औचित्य की सीमायें तोड़कर कोई काम करता है तो पराहम मनुष्य को उसकी गलती का अहसास कराता है। पराहम की दूसरी प्रणाली मनुष्य की व्यक्तित्व का आदर्श प्रस्तुत करती है और अपने किये काम पर मनुष्य या तो गर्व का अनुभव कर सकता है या अपराध बोध से पीड़ित हो सकता है।



चित्र 7.1 : फ्रायड के चेतना के स्तर एवं व्यक्तित्व की संरचना संबंधी विचार

स्रोत: <https://commons.wikimedia.org/>

मनुष्य के जीवन में उसे उत्तेजना और तनाव से बचाने में अहं की विशेष भूमिका रहती है। जब हमसे कोई ऐसी भूल हो जाती है कि हम ऐसा कुछ कर बैठते हैं जो हमें नहीं करना

चाहिये, तो हम मनोवैज्ञानिक युक्ति का सहारा लेते हैं इसी को अहं की सुरक्षा प्रणाली कहा जाता है। फ्रायड का मानना है कि हमारे अन्दर मौजूद अहं की सुरक्षा प्रणाली हमारे मन की उत्तेजना और तनाव से रक्षा करती है। नीचे की तालिका 7.1 में आठ महत्वपूर्ण सुरक्षा प्रणालियों का विवरण दिया गया है।

तालिका 7.1: अहंकार की सुरक्षा प्रणालियों का विवरण

प्रणाली	विवरण
दमन	अचेतन में स्मृतियों तथा मनोभावों से इनकार करना। यह काफी दर्दनाक और डरावना होता है।
तर्क	अपने व्यवहार अथवा तर्क से यह साबित करने का प्रयास करना कि जो हमने किया है वैसा करने की कोई न कोई वजह ही है।
प्रतिक्रिया व्यक्त करना	अनचाही भावनाओं या मनोभावों को उनके ठीक विपरीत व्यवहार करते हुए नियंत्रण में रखना।
प्रक्षेपण	दूसरों पर अपनी अवांछित विशेषताओं को थोपना।
प्राज्ञीकरण	सामने आने वाली समस्या को बुद्धिमत्ता और विवेक से इस तरह विश्लेषित करना कि भावनाओं का मन पर प्रभाव न पड़े।
इंकार	सामने आई समस्या से सीधा इंकार करना।
विस्थापन	इच्छाओं को व्यक्ति अथवा स्थान से स्थानांतरित कर देना।

फ्रायड के अनुसार व्यक्तित्व के विकास की पांच अवस्थाएँ होती हैं। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का मौलिक हिस्सा पांच साल की उम्र तक पूरा विकसित हो जाता है। इसीलिए ऐसा कहा जाता है कि किसी बच्चे को जैसा बनाना है उसे पांच साल तक ही बनाया जा सकता है। उसके बाद वह वैसा ही रहता है जैसा कि पांच साल तक बन चुका होता है। एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुंचने के लिए मनुष्य को सामने आने वाले अवरोधों को हराना पड़ता है। नीचे हम मनोवैज्ञानिक विकास की पांच अवस्थाओं का विवरण प्रस्तुत करेंगे।

पहली अवस्था: मौखिक चरण (जन्म से 18 महीने तक)

इस अवस्था में बच्चे के पास आनन्द का अनुभव करने के लिए केवल उसका मुख होता है। इस अवस्था में बच्चे पूरी तरह अपनी मां पर अथवा अन्य अभिभावक पर निर्भर करते हैं। अपनी चारों ओर की दुनियां को समझने और उसमें से सुख प्राप्त करने के लिए उनके पास केवल दो तरीके होते हैं चूसना और निगलना। इस अवस्था में यदि बच्चे को ज्यादा या कम खिला-पिला दिया जाए तो उसे अधिक खाने की आदत पड़ जाती है और बड़े होने पर उसमें नशा करने की आदत पड़ सकती है। बच्चे का खुराक ठीक से न मिलने पर उसके अंदर मनोवैज्ञानिक द्वंद्व पैदा हो जाता है जिसे वह नियंत्रण में करना नहीं जानता। जिसे के परिणामस्वरूप आगे चलकर बच्चे में किसी भी चीज को उठाकर चूसने या काटने की आदत पड़ जाती है। वह अपने नाखून भी चबाने लग जाता है। फ्रायड ने स्पष्ट किया कि ये लक्षण सामान्य से थोड़ा हटकर होते हैं। ऐसे व्यक्ति या तो आक्रामक प्रवृत्ति के हो जाते हैं या दबू प्रवृत्ति के।

दूसरी अवस्था : गुदा अवस्था (18 महीने से 3 साल तक)

इस अवस्था के दौरान बच्चे को यह सीखना होता है कि वह अपनी पेशाब करने की प्रवृत्ति तथा मल त्याग करने की प्रवृत्ति को नियंत्रण में कैसे रखे। बच्चों को इस अवस्था में अपने पाचन संस्थान से जुड़े अंगों में होने वाली गति से सुख का अनुभव होने लगता है। इस अवस्था में यदि बच्चे को पेशाब और मल त्याग पर सही रूप से नियंत्रण करना नहीं सिखाया जाए तो उसकी इन प्रणालियों में अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न हो सकते हैं।

तीसरी अवस्था: जननांगों के अनुभूति की अवस्था (3 से 5 वर्ष तक)

इस अवस्था में आते-आते बच्चे को अपने जननांगों में एक प्रकार की सनसनी सी अनुभव होने लगती हैं। वे जाने या अनजाने अपने जननांगों को छूते हैं और सुख का अनुभव करते हैं। इसी अवस्था में बच्चों को नर और मादा का अन्तर समझ आ जाता है। फ्रायड का कहना है कि नर बच्चा इडीपस ग्रंथि महसूस करता है। इस अवस्था में नर बच्चा अपनी मां के प्रति काम-वासना का अनुभव करता है। साथ ही उसके मन में पिता के प्रति दुर्भाव पैदा होता है और एक तरह का डर भी कि मां के प्रति काम-वासना रखने के कारण कहीं पिता उसे सजा न दे दे। मादा बच्चे में इलैक्ट्रा कामप्लेक्स पैदा हो जाती है। इसके प्रभाव से लड़की में पिता के प्रति काम-वासना उत्पन्न होती है तथा माता के प्रति दुर्भाव पैदा होता है। फ्रायड के अनुसार इन ग्रंथियों को सफलतापूर्वक निष्क्रिय कर देने के बाद बच्चों में नर या मादा के रूप में पहचान स्थिर हो जाती है तथा वैसा ही व्यक्तित्व बन जाता है।

चौथी अवस्था: विलम्ब अवस्था (6 से 12 वर्ष तक)

बच्चे में जो काम ऊर्जा होती है वह इस अवस्था तक आते-आते शिक्षा खेल तथा सामाजिक गतिविधियों से जुड़ जाती है और उसमें विपरीत लिंग के प्रति लगाव सीमित हो जाता है।

पांचवी अवस्था: जननांग अवस्था (13 वर्ष से वयस्क होने तक)

तेरह वर्ष की उम्र पार करते-करते मनुष्य में काम ऊर्जा फिर से लौट आती है। विकास के विभिन्न चरणों को पार करते हुए जब बच्चा तेरह वर्ष की उम्र में पहुंचता है तो उसके मन में विपरीत लिंग वाले बच्चे के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाय इसकी समझ उसमें आने लगती है। यदि पिछली अवस्थाओं में बच्चे के विकास में बाधाएँ हों तो उसमें ऐसी कुंठाएँ उत्पन्न हो सकती हैं जिसके कारण विपरीत लिंग वाले व्यक्ति के साथ संबंध बनाने में उसे कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। मनोवैज्ञानिक रोगों का इलाज करने के लिए फ्रायड ने 'मनोविश्लेषण' की ओर पूरा ध्यान दिया।

7.3.1.1 नव-फ्रायडवादी: फ्रायड के अनुयायी तथा विरोधी

व्यक्तित्व के मामले में फ्रायड ने जो विचार व्यक्त किए थे, वे आगे चलकर बहुत लोकप्रिय हुए। अनेक मनोवैज्ञानिकों ने फ्रायड के विचारों का समर्थन किया लेकिन जैसे-जैसे समय बीता, कुछ ऐसे विचारक सामने आए जो फ्रायड के सिद्धान्तों को कुछ हद तक मानने को तैयार थे परन्तु पूरी तरह से नहीं। इनमें से कुछ विद्वानों ने मानव व्यक्तित्व को लेकर गहन अध्ययन किए और उन्होंने मानव व्यक्तित्व विकास के अपने नये सिद्धान्तों का अन्वेषण कर लिया। क्योंकि ये नये विचारक अपने सिद्धान्तों और विचारों के आधार पर मनोविज्ञान के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपने आप को नव-फ्रायडवादी, नवविश्लेषणात्मक अथवा मनोवेगीय विश्लेषक, आदि कहने लगे। नव-फ्रायडवादी विचारकों में प्रमुख हैं- एडलर, हॉर्नी, फ्रॉम, युंग तथा इरिक्सन थे। इस इकाई में हम केवल दो नव-फ्रायडवादी मनोवैज्ञानिकों के सिद्धान्तों पर विचार करेंगे जिनके नाम हैं, एडलर और युंग।

अल्फ्रेड एडलर: व्यक्तिपरक मनोविज्ञान

अल्फ्रेड एडलर (1870-1937) ऑस्ट्रेलिया के चिकित्सक थे। उन्होंने मनुष्य के व्यक्तित्व के विकारा को सामाजिक संदर्भों में देखने का प्रयत्न किया। साथ ही मनुष्य के अन्य व्यक्तियों से संबंधों की भूमिका को भी रेखांकित किया। एडलर का विचार था कि मनुष्य का यह स्वभाव होता है कि वह अपने जीवन में प्रसिद्ध होना चाहता है, शक्तियां प्राप्त करना चाहता है और दूसरों की तुलना में अपने आपको बेहतर साबित करना चाहता है। इन्हीं तीनों स्थितियों को प्राप्त करने की धुन में वह जिन्दगी की सारी बाधाओं से संघर्ष करता है और अंततः उन्हें जीत लेता है। अपने जीवन को सार्थक बनाने के लिए लोग अपनी अलग जीवन शैलियां भी विकसित कर लेते हैं। 1954 में एडलर ने अपने विचारों के आधार पर अपने मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त की स्थापना की जिसे व्यक्तिपरक अथवा वैयक्तिक मनोविज्ञान कहा जाता है। उनका मानना था कि बचपन के आरंभिक दौर के अनुभव, मनुष्य के व्यक्तित्व को आधार प्रदान करते हैं। यदि उसे बचपन में प्रोत्साहन मिले तो उसकी क्षमताओं में वृद्धि हो जाती है, और उसके व्यक्तित्व में जीवन भर के लिए दूसरों का सहयोग करने का गुण समाहित हो जाता है। यदि बच्चे को बचपन में बार-बार झिड़का जाए तो उसका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। वह दुर्व्यवहार करने लग सकता है और जीवन में आगे बढ़ने के लिये गलत तरीका अपनाना भी सीख सकता है। एडलर का विचार है कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का मूल्यांकन उसके सामाजिक संदर्भों में ही किया जाना चाहिये। हमारे व्यवहार के पीछे कोई प्रवृत्ति काम नहीं करती (जैसा कि फ्रायड मानते हैं)। हमारे अन्दर से प्रस्फुटित होने वाली अंदरूनी शक्ति हमें किसी खास किस्म के व्यवहार को करने के लिये उकसाती है। उसने इस शक्ति को मनुष्य की पूर्णता प्राप्त करने की इच्छा का नाम दिया है। यह अंदरूनी इच्छा व्यक्ति को प्रोत्साहित करती है और वह अपनी पूरी क्षमता विकसित करने के लिये सक्रिय हो जाता है।

हीनता की भावना और श्रेष्ठता की भावना

जब हम अपने आपको दूसरों की तुलना में कमजोर, अक्षम, पराश्रित आदि महसूस करते हैं, तो हमें ऐसा लगने लगता है कि हम दूसरों से कमतर हैं। इसे हीनता की भावना कहते हैं। हीनता का अहसास होना आंतरिक है और प्राकृतिक भी। यदि कोई मनुष्य वह पाता है कि उसके अन्दर हीनता की भावना आ रही है, और वह उससे बाहर निकलना चाहता है और कोई ऐसा काम कर डालना चाहता है जिससे उसे जीवन में बड़ी उपलब्धि अथवा सफलता प्राप्त हो जाय। इससे स्पष्ट है कि अधिक से अधिक विकास करना अथवा अधिक से अधिक उपलब्धियां प्राप्त करना ही जीवन में हीनता की भावना को जीतना है। अगर कोई व्यक्ति ऐसा नहीं कर पाता, तो उसके अंदर हीनता की ग्रंथि बन जाती है। और यदि ऐसे में व्यक्ति अत्यधिक उपलब्धियां प्राप्त कर ले, बहुत ज्यादा सफलताएं हासिल कर ले, तो उसके अन्दर उच्चता की ग्रंथि बन जाती है।

सहोदर स्पर्धा एवं जन्म क्रम

दो भाइयों के बीच में आपस में माता-पिता अथवा अभिभावकों का प्यार और निकटता प्राप्त करने के लिए जो प्रतिस्पर्धा की भावना होती है उसे सहोदर स्पर्धा कहा जाता है। इससे उनके व्यक्तित्व का निर्माण होता है। एडलर के अनुसार जब घर में कोई नया बच्चा पैदा होता है तो उसे देखकर पहले वाले बच्चे में उसके प्रति ईर्ष्या अथवा वैमनस्य का भाव पैदा हो जाता है। उसे ऐसा लगने लग जाता है कि यह नवजात अब माता-पिता की दृष्टि में मेरा महत्व कम कर देगा। क्योंकि जब वे इसे प्यार करने लगेंगे तो मुझे अपने हिस्से का पूरा प्यार नहीं मिल पाएगा।

इसी आधार पर एडलर का यह मानना है कि मनुष्य के व्यक्तित्व पर इस बात का भी प्रभाव

पड़ता है कि वे अपने परिवार में पहले पैदा हुआ है अथवा बाद में। प्रायः पहला बच्चा ज्यादा जिम्मेदार, आज्ञाकारी और प्रतिभा सम्पन्न होता है। उसके बाद में पैदा होने वाला बच्चा अपना ध्यान समाज के साथ तारतम्य स्थापित करने में ज्यादा लगाता है। उसके केन्द्र में उसके अपने उतने नहीं होते जितने कि दूसरे होते हैं। और यदि तीसरा बच्चा आ गया तो, वह अपने आपको ज्यादा असुरक्षित महसूस करने लगता है, इसीलिए वह दिखाने का प्रयास करता है कि वह बहुत मजबूत है। उसके अन्दर स्वाभिमान की भावना बहुत ऊँची होती है परन्तु प्रतियोगिता की भावना साधारण रह जाती है। इसी संदर्भ में एक बात और महत्वपूर्ण है कि जो बच्चा सबसे बाद में पैदा होता है उसकी कभी उपेक्षा नहीं होती। वह परिवार की नजरों में जीवन भर के लिए नन्हा बच्चा ही बना रहता है।

कार्ल युंग: विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान

कार्ल युंग (1875-1961) स्विट्जरलैण्ड के मनोवैज्ञानिक थे और वह फ्रायड के घनिष्ठ मित्र भी थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मनुष्यों के व्यक्तित्व और व्यवहारों को जानने के लिए हमें उन संस्कृतियों का अध्ययन करना चाहिए जिनमें वे मनुष्य पले बढ़े हैं। क्योंकि वह संस्कृति ही है जो मानवता के विभिन्न रहस्यों को अपने अन्तर में छिपाए रहती है। युंग के व्यक्तित्व के सिद्धान्त को विश्लेषणात्मक सिद्धान्त अथवा विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (1933) कहा जाता है। युंग के अनुसार हर व्यक्ति का अपना अचेतन मन होता है। जिसमें व्यक्ति के सारे अनुभव भरे रहते हैं परन्तु कुछ कारणों से मनुष्य उस पर ध्यान नहीं दे पाता। हर मनुष्य में चेतन और अचेतन मन की शक्तियों के बीच संतुलन बनाए रखने की क्षमता होती है। फ्रायड यह मानते थे कि किसी मनुष्य का व्यक्तित्व उसके अचेतन मन से सीधा जुड़ा होता है। 'कार्ल गुस्ताव युंग' ने फ्रायड के इस सिद्धान्त को थोड़ा और आगे बढ़ाते हुए कहा कि अचेतन मन मनुष्य की दमित स्मृतियों, काम वासनाओं तथा आक्रामक प्रवृत्तियों का संग्रहालय होता है।

युंग, फ्रायड के व्यक्तित्व विकास के सिद्धान्त को ज्यों का त्यों स्वीकार नहीं करा। वह अचेतन मन में भरे समस्त मनोविकारों व इच्छाओं को केवल उसी व्यक्ति की निजी अनुभूतियों नहीं माना, अपितु उसकी अपनी तथा जिनके संपर्क में मनुष्य आता है, उन सबकी अनुभूतियों का सामूहिक व साझा संचलन माना है। इस प्रकार मनुष्यों के अचेतन मन सभी मनुष्यों की अनुभूतियों के संचय होते हैं। क्योंकि हम सभी मनुष्य अपने पूर्वजों के अंश हैं और हम सबके पूर्वज एक ही थे इसीलिये हम सबका अतीत एक साझा अतीत है। हमारे अचेतन मन में हम सबके साझा अतीत की जो स्मृतियां भरी हैं उन्हीं को सामूहिक अचेतन कहा जाता है। कार्ल युंग के अनुसार यही सामूहिक अचेतन मन व्यक्ति के व्यक्तित्व की आधारशिला रखता है। सामूहिक अचेतन मन में सभी आद्य या आद्य रूप और विचार समाहित रहते हैं जो हमें अपने आदिकाल से लेकर अब तक के पूर्वजों से प्राप्त हुए हैं। उदाहरण के लिये पुनर्जन्म की अवधारणा, ईश्वर की अवधारणा तथा बुराई की अवधारणा, आदि। हमारे सामूहिक अचेतन को कार्ल युंग ने आद्य रूपों की संज्ञा दी है। इसमें सभी मनुष्यों की भागेदारी है तथा सर्व व्यापकता का गुण विद्यमान है। कार्ल युंग ने विभिन्न प्रकार के आद्यरूपों की व्याख्या की है इनमें से कुछ आद्यरूपों का विवरण इस प्रकार है-

- i) अपनी स्वयं की पहचान को संपूर्णता के साथ समझना।
- ii) छवि जिसे मनुष्य दूसरों के सामने प्रस्तुत करता है।
- iii) अणिमा पुरुषों का स्त्रैण पक्ष।
- iv) विद्वेष : स्त्रियों का मर्दाना पक्ष।

- v) प्रतिच्छाया: हमारे व्यक्तित्व की कमजोरियाँ जिनमें आक्रामक इच्छाएं, शारीरिक प्रवृत्तियां तथा हीनता की भावना आदि सम्मिलित हैं।

बोध प्रश्न 1

- 1) यौन व्यवहार के विकास की पहली दो अवस्थाओं के बारे में संक्षिप्त विवरण दीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

- 2) इड, अहं तथा पराहम की व्याख्या कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

- 3) 'सामूहिक अचेतन' से आप क्या समझते हैं?

.....
.....
.....
.....
.....

- 4) सहोदर स्पर्द्धा से आप क्या समझते हैं?

.....
.....
.....
.....
.....

7.3.2 व्यक्तित्व का व्यवहारवादी उपागम

व्यक्तित्व के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त की सबसे ज्यादा आलोचना व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने की है। वे इस विचार को नहीं मानते कि मनुष्य के व्यक्तित्व को उसके मानस तथा अचेतन मन में संग्रहित मनोविकारों के आधार पर समझा जा सकता है। जॉन बी. वाटसन ने सबसे पहले व्यवहारवादी सिद्धान्त को व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए आधार माना। इसके बाद 'बी. एफ. स्किनर' ने व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए व्यवहारवाद पर सबसे ज्यादा जोर दिया।

व्यवहारवादी सिद्धान्तकारों के अनुसार व्यक्तित्व एक अदृश्य तथा काल्पनिक अवधारणा है। इसे आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं से जोड़ना एक दम गलत है। व्यवहारवादियों के अध्ययन के केंद्र में संबंधों से पैदा होने वाली उत्तेजना प्रतिक्रिया तथा उसका सुदृढीकरण विशेष रूप से विद्यमान रहता है। उनके अनुसार व्यक्तित्व को समझने के लिए उस व्यक्ति के एसआर संबंधों को समझने की जरूरत है। उनके अनुसार व्यक्तित्व विभिन्न प्रोत्साहनों एवं संदर्भों के प्रति पैदा होने वाली सुदृढ प्रतिक्रियाएँ मिलकर व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। व्यवहारवादियों के अनुसार व्यवहार को समझने के लिए तीन प्रमुख सिद्धांतों का पालन करना पड़ता है, ये हैं क्लासिकी अनुबंधन, यंत्रीय अनुबंधन तथा अवलोकन अधिगम। व्यवहारवादी यह मानते हैं कि 'हम जो कुछ हैं वह सीखने के कारण हैं'। सीखने या जानने की प्रक्रिया सुदृढीकरण तथा अनुबंधन द्वारा सम्पन्न होती है। व्यक्ति अलग-अलग स्थितियों-परिस्थितियों में जीवन जीता है, इसलिए उसका एसआर अधिगम पैटर्न भी अलग-अलग होता है। यही कारण है कि सबके व्यक्तित्व एक दूसरे से बहुत अलग प्रकार के होते हैं।

वाटसन का यह दावा है कि मानव-व्यवहार को समग्रता के साथ उसके प्रोत्साहनों तथा प्रतिक्रियाओं से तय किया जा सकता है। वाटसन ने कहा था -“मुझे एक दर्जन स्वस्थ बच्चे दे दीजिए, मैं उनका इस तरह पालन-पोषण करके दिखा दूंगा कि उनमें से हर कोई किसी न किसी क्षेत्र में विशेष रूप से दक्ष होगा कोई सफल डाक्टर बन जाएगा, कोई अधिवक्ता, कोई कलाकार, कोई उच्च कोटि का व्यवसायी, यहां तक मैं उनमें से किसी को भिक्षा मांगने में दक्ष भिखारी बना सकता हूँ और शातिर चोर भी, फिर चाहे वे किसी भी वंश के हों, किसी भी जाति के हों, उनके माता-पिता का व्यवसाय कुछ भी क्यों न रहा हो, उनमें प्रतिभा, लगन तथा रुचियों व क्षमताओं का कोई भी स्तर क्यों न हो”।

7.3.3 व्यक्तित्व का मानवतावादी उपागम

मानव व्यवहार के प्रति मनोविश्लेषकों तथा व्यवहारवादियों के निराशावादी रूझान की प्रतिक्रिया स्वरूप, मनोविज्ञान के तीसरे महत्वपूर्ण सिद्धान्त का जन्म दिया जिसे मानवतावादी सिद्धान्त कहा जाता है। अब्राहम मैस्लो तथा कार्ल रोजर्स, दो मनोवैज्ञानिक मानवतावादी व्यक्तित्व के सिद्धान्त के अगुआ रहे हैं। मानवतावादी सिद्धान्त इस बात पर विचार करता है कि व्यक्तित्व का विकास किस प्रकार होता है। मैस्लो तथा रोजर्स हमारे सोचने के तरीकों को केन्द्र में रखकर व्यक्तित्व का अध्ययन करते हैं। हमारी भावनाएँ, हमारे दृष्टिकोण, हमारे विचार और हमारा व्यवहार हमारे व्यक्तित्व को दर्शाता है। वे किसी व्यक्ति के चरित्र में उसकी स्वयं की छवि को अध्ययन के केंद्र में रखते हैं जिसमें भावनाएँ, सोचने का तरीका, दृष्टिकोण और स्व-मूल्यांकन का तरीका शामिल हैं (हॉल तथा लिन्डजी, 1970)।

कार्ल रोजर्स

कार्ल रोजर्स (1902-1987) एक परामर्शदाता मनोवैज्ञानिक था और वो मैस्लोव के साथ काम करते थे। कार्ल रोजर्स ने व्यक्तित्व के मानवतावादी सिद्धान्त को जन्म दिया। मैस्लोव की तरह वह भी मनुष्यों में मानव की अच्छाइयां देखने में विश्वास रखते थे। वह मनुष्यों के व्यवहार को उनके जीवन के लक्ष्यों से जोड़कर देखते थे। वह किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण जैविक व्यवहार को महत्व देते थे। वह मानते थे कि मनुष्य के घटना संबंधी क्षेत्र में उसके जीवन के अनुभव विशेष रूप से कार्य करते हैं। इन अनुभवों से उसके स्वयं के व्यक्तित्व का विकास होता है। जब एक बच्चा बड़ा होता है तो वह अनेक प्रकार का व्यवहार करता है। उनमें से कुछ ऐसे व्यवहार होते हैं जिन्हें अच्छा माना जाता है और कुछ ऐसे होते हैं जिन्हें अच्छा नहीं माना जाता। बच्चे के जो व्यवहार तथा काम ठीक नहीं माने जाते, तब उसे ऐसा लगता है कि उसमें इन कामों को करने की क्षमता नहीं है और इसलिए वह आगे उन कामों तथा व्यवहारों से बचने लगता है। हर व्यक्ति अपनी वास्तविक छवि और आदर्श छवि के बीच

संघर्ष करता हुआ दिखता है क्योंकि उसकी आदर्श छवि वह होती है जिसे वह बनाना चाहता है और वास्तविक छवि वह होती है जिसके साथ वह जीवन यापन कर रहा होता है। वास्तविक छवि और आदर्श छवि के बीच के अन्तर को वह मिटाना चाहता है परन्तु यदि मिटा नहीं पाता तो उसके अन्दर मानसिक द्वंद्व पैदा हो जाता है जिसे मनोचिकित्सा द्वारा ठीक किया जा सकता है। कार्ल रोजर्स ने अपना यह सिद्धान्त उस समय बनाया था जब वह अपने क्लिनिक में आने वाले रोगियों से बातें करते थे। उन्हें पता लगा कि हर व्यक्ति के लिये उसका स्वं सबसे महत्वपूर्ण होता है। यही कारण है कि कार्ल रोजर्स का मानवतावादी सिद्धान्त मनुष्यों के अपने अस्तित्व तथा स्वार्थ के इर्द-गिर्द घूमता है। कार्ल रोजर्स के अनुसार मनुष्य अपने साथ दो स्तरों पर जीता है। एक वह स्तर जिसे वह जी रहा है और एक वह जिसे वह जीना चाहता है। जिस तरह का जीवन वह जीना चाहता है वह उसका आदर्श होता है और जिस तरह का जीवन वह जी रहा होता है वह उसके जीवन की वास्तविक अवस्था होती है। अगर किसी व्यक्ति की वास्तविक जीवन अवस्था और आदर्श जीवन अवस्था के बीच की खाई पार दी जाय, यदि उन दोनों अवस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित हो जाय तो उस मनुष्य में जो चाहे वह करने अथवा प्राप्त करने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। यह वह अवस्था है जब मनुष्य अपने अन्दर उच्चतम अवस्था उत्पन्न कर लेता है। उच्चतम अवस्था वाले मनुष्यों को कार्ल रोजर्स पूर्ण विकसित मनुष्यों की संज्ञा देता है।

इसके विपरीत यदि मनुष्यों की वास्तविक और आदर्श जीवन अवस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित नहीं हो पाता तो उससे मनुष्य उत्तेजना और तनाव का शिकार हो जाता है। कार्ल रोजर्स यह भी मानते हैं कि इन दोनों अवस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने में बाहरी वातावरण का विशेष योगदान रहता है। यदि किसी व्यक्ति को बिना शर्त सकारात्मक स्वीकृति मिल रही है तो वह अपने वास्तविक आत्म विश्वास को महसूस कर सकता है और उसमें अपने संकल्प को वास्तविकता में बदलने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। बिना शर्त सकारात्मक स्वीकृति का अर्थ है कि हम उस व्यक्ति के व्यक्तित्व को उसकी क्षमताओं को बिना शर्त स्वीकार करते हैं।

बॉक्स 7.1 : सहानुभूति

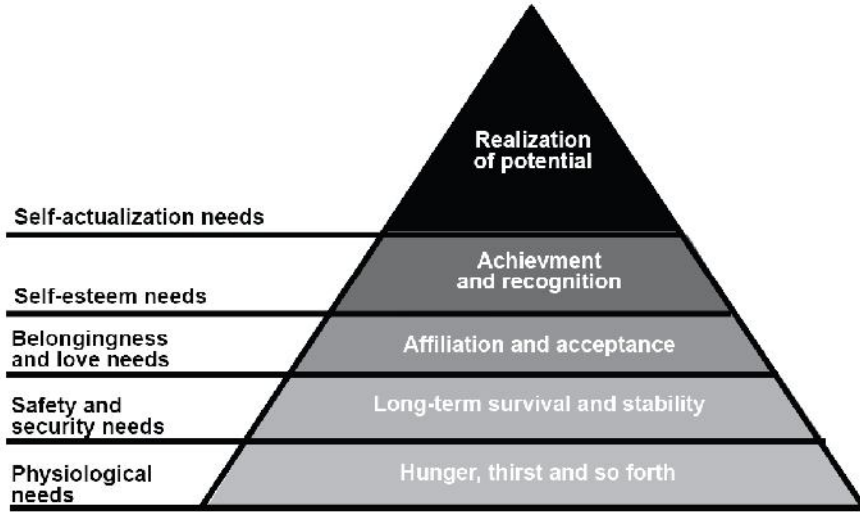
यह शब्द सबसे पहले पिछली शताब्दी में जर्मन भाषा में "einführung" अथवा in-feeling के लिए इस्तेमाल हुआ था। इसका इस्तेमाल सौन्दर्य शास्त्र के सन्दर्भ में किया गया था। तब से लगातार इस शब्द के अर्थ और प्रयोग में परिवर्तन होते रहे हैं। कार्ल रोजर्स ने सहानुभूति शब्द का इस्तेमाल इस संदर्भ में किया है कि मनोवैज्ञानिक को रोगी से बात करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह उसको जैसा कि वह है उसी रूप में स्वीकारे और उसके साथ सहयोग व सहानुभूति का व्यवहार करे।

मैस्लो का स्व-वास्तविकीकरण का सिद्धान्त

अब्राहम मैस्लो (1908-1970) ने सकारात्मक व्यवहारिक गुण पर जोर दिया था। उसे मनुष्य के अस्तित्व की आशावादी सोच पर पूरा विश्वास था। मैस्लो यह मानते हैं कि हर मनुष्य खास होता है और उसे स्व-वास्तविकीकरण अर्थात् अपनी क्षमताओं को पूरी तरह समझने और स्वीकार करने की स्थिति में पहुंचने के लिये अनेक स्तरों से गुजरना पड़ता है। हर मनुष्य को अपनी योग्यता को निखारने के लिए तथा अपनी क्षमताओं में अधिकतम वृद्धि करने के लिए आवश्यक कदम उठाने पड़ते हैं। अपने आपको विकसित करने की क्षमता हर व्यक्ति में अंतर्निहित होती है। जब कोई मनुष्य अपनी क्षमताओं को उच्चतम बिन्दु तक बढ़ा लेता है तो इस उपलब्धि को स्व-वास्तविकीकरण कहा जाता है।

मनुष्य के व्यक्तित्व तथा उसके विकास की उच्चतम संभावनाओं को समझने के लिए मैस्लो ने अनेक ऐसे व्यक्तियों का अध्ययन किया जिन्होंने स्व-वास्तविकीकरण की अवस्था को प्राप्त किया था। जिनमें से प्रमुख नाम हैं अलवर्ट आइन्सटीन, एलीनर रूजवैल्ट, थॉमसजैफरसन

तथा अब्राहम लिंकन। मैस्लो के अनुसार यदि हम किसी व्यक्ति की केवल बुराइयों पर ध्यान केंद्रित रखेंगे तो उसके व्यक्तित्व की वास्तविक प्रकृति को नहीं जान पाएँगे। मैस्लो ने सुझाव दिया है कि किसी मनुष्य की प्रकृति को सही अर्थों में समझना है तो हमें आशावादी दृष्टिकोण अपनाना होगा, हमें व्यक्ति की आशावादी प्रकृति पर अपना ध्यान केंद्रित करना होगा। व्यक्तित्व का विकास करने के लिये मनुष्य को पांच चीजों की जरूरत पड़ती है, जैसा कि आकृति संख्या 7.1 में दिखाया गया है। उच्च स्तरीय आवश्यकताओं को पूरा करने से पहले हमें निम्नस्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति करनी चाहिए। तभी हम व्यक्तित्व का उच्चतम बिन्दु तक विकास कर सकते हैं।



चित्र 7.2: मैस्लो का आवश्यकताओं का अनुक्रम

मैस्लो ने पाया कि जिन्होंने स्व-वास्तविकीकरण के लिए सतत प्रयत्न किए, उनके व्यक्तित्व में कुछ खास विशेषताएं थीं। इनमें प्रमुख थीं चीजों को निस्वार्थ भाव से देखना और अनुभव करना, हर चीज को, हर घटना को स्पष्टता के साथ और समूची एकाग्रता के साथ देखना (मैस्लो, 1967)। जीवन के विविध आयामों से गुजरते हुये अपने अंदर पूरी तरह सामंजस्य बनाए रखना एवं अपने अंदरूनी अस्तित्व को पूरी तरह महसूस करना। ये सब लोग पूरी तरह से सहज, अपने ऊपर स्वयं शासन करने वाले स्वतंत्र तथा अपने लक्ष्यों के प्रति समर्पित थे। इन के अत्यधिक समीपी प्रियजनों की संख्या कम थी और किसी संस्कृति विशेष की सीमाओं में पूरी तरह नहीं बंधे थे।

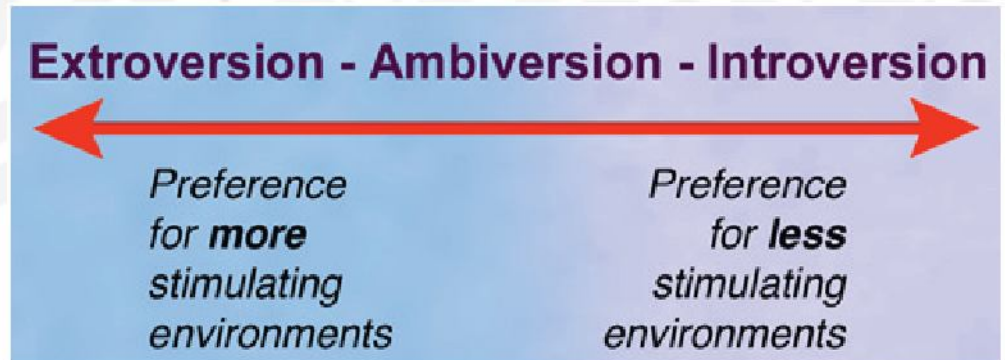
बॉक्स 7.2 : स्व-वास्तविकीकृत लोगों की विशेषताएं

- 1) सच्चाई को परखने की अतिरिक्त क्षमता।
- 2) अपने आपको, दूसरों को तथा प्रकृति को यथारूप स्वीकार करना।
- 3) सहजता, सरलता, प्राकृतिकता।
- 4) समस्या के केन्द्र में पहुंचकर उसका समाधान तलाशने की क्षमता।
- 5) तटस्थ : निजता में जीने के अभ्यास की।
- 6) स्वशासी : संस्कृति और बाह्य परिवेश आदि से मुक्त।
- 7) सदा तरोताजा रहने वाले और दूसरों को प्रोत्साहन देने वाले।
- 8) रहस्यमय अथवा उच्च कोटि की अनुभव-क्षमता से संपन्न।
- 9) संबंधों को तटस्थता से जीने वाले।

- 10) सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले।
- 11) सक्रियता।
- 12) सांस्कृतिक बन्धनों से आजाद।
- 13) लोकतांत्रिक चरित्र।
- 14) संसाधन और लक्ष्य को अलग-अलग समझने वाले।
- 15) विचारशील परंतु हंसमुख।

7.3.4 व्यक्तित्व के लक्षणात्मक सिद्धान्त

कुछ सिद्धान्तकारों का यह मानना था कि व्यक्तित्व हमारे समस्त गुणों व विशेषताओं का समूह होता है जो हमारे व्यवहार को सुनिश्चित करता है। किसी व्यक्ति के गुणों व लक्षणों की पहचान करके उनका गहराई से अध्ययन करने के बाद, हम यह बता सकते हैं कि उस व्यक्ति का व्यक्तित्व कैसा है। आगे बढ़ने से पहले हमें लक्षणों के स्तरों की अवधारणा को समझना होगा जिनके आधार पर व्यक्ति व्यवहार करता है। व्यक्ति के गुणों के आधार पर हम यह पता लगा सकते हैं कि उसका व्यक्तित्व अंतर्मुखी है या बहिर्मुखी। जो लोग बहिर्मुखी होते हैं उनका स्वभाव ज्यादा दोस्त बनाना होता है। वे बाहर निकलने में झिझक महसूस नहीं करते, खुलकर बातें करते हैं तथा खतरे उठाने में आनंद का अनुभव करते हैं। जो अंतर्मुखी होते हैं वे किसी को अपना दोस्त नहीं बनाना चाहते हैं, वे अपने आप में ही रहते हैं और नई-नई चीजों को देखने का उन्हें कोई चाव नहीं होता। जैसा कि चित्र 7.2 में दिखाया गया है कोई व्यक्ति किसी ओर जा सकता है और उसका व्यवहार उसी के अनुसार होगा।



चित्र 7.3 : बहिर्मुखी-अंतर्मुखी वर्ण पट

स्रोत: <https://commons.wikimedia.org/>

लक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व की पहचान, हिप्पोक्रेटस के काल से ही आरंभ हो गया था। आधुनिक काल में लक्षणों के आधार पर व्यक्तित्व की व्याख्या करने वाले मतों में गॉर्डन अलपोर्ट, रेमंड कैटिल, हैस इसेनक, रोबर्ट मेक्रे तथा पॉल कोस्टा विशेष रूप से चर्चा में हैं।

7.3.4.1 अलपोर्ट का लक्षणात्मक सिद्धान्त

गार्डन अलपोर्ट (1897-1967) तथा उनके साथी हैनरी ऑडबर्ट ने अंग्रेजी भाषा में 17953 लक्षणात्मक शब्दों की सूची तैयार की थी जिनके आधार पर व्यक्तित्व का वर्णन किया जा सकता है। बाद में चलकर यह मनोवैज्ञानिक अध्ययन व्यक्तित्व विकास संबंधी पांच सूत्रीय सिद्धान्त (1936) का आधार बने। इस खोज के आधार पर अलपोर्ट ने 4500 लक्षणात्मक शब्दों की सूची बनाई और व्यक्तित्व के लक्षणात्मक सिद्धान्त की स्थापना की। इस सिद्धान्त के अनुसार तीन प्रकार के लक्षण प्रमुख रूप से हमारे व्यक्तित्व को संचालित करते हैं। इन

लक्षणों को कार्डिनल लक्षणों, केन्द्रीय लक्षण तथा माध्यमिक लक्षण कहा जाता है। अल्पोर्ट ने इन सभी लक्षणों को क्रमबद्ध किया है।

कार्डिनल लक्षण : ये व्यक्तित्व के प्रमुख लक्षण होते हैं। अल्पोर्ट द्वारा तैयार की गई लक्षणों की सूची में ये सबसे पहले आते हैं और ये ही किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को सबसे ज्यादा प्रभावित करते हैं। कभी-कभी तो ये लक्षण किसी व्यक्ति में इतने ज्यादा उभर कर आ जाते हैं कि वह व्यक्ति इन्हीं के लिये प्रसिद्ध हो जाता है। जैसे मदर टैरेसा परोपकार के लिए प्रसिद्ध हो गई और महात्मा गांधी अपनी ईमानदारी के लिए प्रसिद्ध हो गए। दुनिया में ऐसे लोगों की संख्या गिनी चुनी ही होती है जिनके व्यक्तित्व पर कार्डिनल लक्षण पूरी तरह हावी होता है। सामान्यतः अधिकतर लोगों के व्यक्तित्व में अनेक प्रकार के लक्षण पाए जाते हैं।

केन्द्रीय लक्षण : इस श्रेणी में आने वाले लक्षण अल्पोर्ट के लक्षणों की सूची में दूसरे स्थान पर आते हैं। अल्पोर्ट के अनुसार हर व्यक्ति के व्यक्तित्व में पांच से लेकर दस तक केन्द्रीय लक्षण अलग-अलग अनुपात में होते हैं। ये लक्षण स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं और हमारे व्यक्तित्व को एक खास तरह का बना देते हैं। ये लक्षण हैं प्रतिभा, वफादारी, निर्भरता, आक्रामकता।

माध्यमिक लक्षण: व्यक्तित्व के ये लक्षण अपेक्षाकृत कम महत्व के माने जाते हैं। ये वे लक्षण हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में स्थितियों व परिस्थितियों के अनुसार प्रकट होते हैं। जैसे एक तेज तर्रार बच्चा अपने शिक्षक के सामने उतना खुलकर नहीं बोलता जितना कि सामान्यतः बोलता है। यह लक्षण बड़ी संख्या में होते हैं और किसी व्यक्ति के निजी व्यवहार को प्रभावित करते हैं। अल्पोर्ट के अनुसार ये लक्षण विभिन्न स्थितियों में उत्पन्न होते हैं और ये व्यक्ति के व्यक्तित्व की संकोची प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

7.3.4.2 कैटेल का लक्षणात्मक सिद्धान्त

ब्रिटिश मनोवैज्ञानिक रैमण्ड बी. कैटेल ने (1905-1998), अल्पोर्ट द्वारा अंग्रेजी में तैयार किए गए 4500 लक्षणों का विश्लेषण किया और उनके आधार पर उसने मानव व्यक्तित्व के लक्षणों को 16 आयामों में विभक्त किया।

तालिका 7.2 : कैटेल द्वारा निर्धारित व्यक्तित्व के लक्षणों की श्रेणियां

लक्षण	निम्न स्तर	उच्च स्तर
A	अंतर्मुखी	बहिर्मुखी
B	कम प्रतिभाशाली	अधिक प्रतिभाशाली
C	स्थिरता	भावुकता
E	विनम्र	उग्र
F	सादा	उत्साही
G	तिकडमी	ईमानदार
H	दबू	साहसी
I	कठोर	कोमल
L	विश्वसनीय	अविश्वसनीय

M	व्यावहारिक	अव्यावहारिक
N	सीधासादा	शरारती
O	सौम्य	आशंकित
Q ₁	अपरिवर्तनवादी	प्रयोगवादी
Q ₂	पराश्रित	स्वावलम्बी
Q ₃	अनुशासन हीन	अनुशासित
Q ₄	तनावरहित	तनावयुक्त

कैटेल ने मुख्य लक्षणों को ज्यादा महत्वपूर्ण माना है तथा सतही लक्षणों को कम महत्वपूर्ण। कैटेल ने सामान्य लक्षणों तथा विशेष लक्षणों की तुलना भी की है। सामान्य लक्षण प्रायः हरेक में पाए जाते हैं जैसे बुद्धिमानी। परन्तु विशेष लक्षण व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न अनुपात में होते हैं और किसी-किसी में ही पाए जाते हैं। जैसे व्यवहार तथा रुचियाँ। कैटेल ने आगे चलकर योग्यता, स्वभाव तथा गत्यात्मक लक्षणों को भी पहचान की है। योग्यता के लक्षणों से यह पता लगता है कि कोई व्यक्ति किसी काम को कैसे पूरा करेगा। स्वभाव नामक लक्षण से पता लगता है कि कोई व्यक्ति विभिन्न स्थितियों में अपनी भावनाओं को किस प्रकार प्रकट करता है। गत्यात्मक लक्षण व्यक्ति के दूसरों को बढ़ावा देने, रुचियाँ तथा महत्वाकांक्षा आदि का परिचय देता है। कैटेल ने आगे चल कर संरचनात्मक लक्षण तथा वातावरण आधारित लक्षणों की भी व्याख्या की। ये लक्षण व्यक्तित्व के प्रमुख लक्षणों में आते हैं और हमारी शारीरिक विशेषताओं पर निर्भर करते हैं। वातावरण तथा परिस्थितिगत लक्षण समाज तथा परिस्थितियों के साथ मनुष्यों की प्रतिक्रियाओं का परिचय देते हैं। सोलह प्रकार के लक्षणों को क्रमबद्ध करने के लिये कैटेल ने अपने साथियों इबर तथा टैस्टुका के साथ मिलकर 1977 में एक प्रश्नावली तैयार की जिसे 16 व्यक्तित्व घटक प्रश्नावली कहा जाता है।

7.3.4.3 आइजेंक का लक्षणात्मक सिद्धान्त

हैन्स आइजेंक (1916-1997) कैटेल के समकालीन मनोवैज्ञानिक थे। यद्यपि वह व्यवहारवाद में विश्वास रखते थे। लेकिन फिर भी वह यह मानते थे कि हमारा व्यक्तित्व आंतरिक होता है तथा 'जीन्स' आधारित होता है। उन्होंने व्यक्तित्व के लक्षणों को समझने के लिए विश्लेषणात्मक सिद्धान्त को आधार बनाया। आरम्भ में वह यह मानते थे कि हमारे व्यक्तित्व के दो आयाम होते हैं एक बहिर्मुखी दूसरा अंतर्मुखी। इसको उसने भावुकता और स्थिरता की श्रेणियों में भी बांट कर देखा। उसके सिद्धान्त के अनुसार इन आयामों के विभिन्न युग्म अनेक प्रकार के व्यक्तित्वों के विकास के लिए जिम्मेदार होते हैं। बाद में अपने मॉडल में तीसरा आयाम भी जोड़ा और इसे सामाजिकरण अथवा समाज विरोधी नाम दिया। बहिर्मुखता और अंतर्मुखी प्रकट करने वाले व्यक्तित्व के आयाम इस बात के प्रतीक हैं कि मनुष्य अपने बहिर्जगत से और आंतरिक जगत से किस प्रकार प्रतिक्रिया करता है। जो लोग बहिर्मुखी होते हैं वे प्रायः सामाजिक होते हैं और नए-नए क्षेत्रों से परिचय प्राप्त करने में उन्हें अच्छा लगता है और जब कभी भी वे तनाव में होते हैं तो दूसरों से खुलकर बात करने का उनका मन होता है। लेकिन जो लोग अंतर्मुखी होते हैं वे बहुत संकोची स्वभाव के होते हैं उन्हें अकेलापन पसंद आता है। जब कभी भी वे तनाव में होते हैं तो किसी से बात करना तक पसंद नहीं करते और अपने में ही डूबते चले जाते हैं। स्थिरता व आयाम है जो मनुष्यों के भावनात्मक व्यवहार तथा दुर्भावना से पीड़ित व्यवहार दर्शाता है। जो लोग अधिक भावुक होते हैं वे अपने मन पर काबू नहीं रख पाते और उनका स्वभाव अजीब तरह का होता है। उनके

मन में दूसरों के प्रति दुर्भावना घर करने लगती है। लेकिन इसके विपरीत स्थिर मन लोग प्रायः शान्त रहते हैं तथा व्यक्तित्व के अंतिम आयाम में सामाजिकता और समान के प्रति असहिष्णुता शामिल हैं। जो लोग असहिष्णु होते हैं उनका व्यवहार आक्रामक हो जाता है। वे अहंकारवादी हो जाते हैं, समाज विरोधी और विद्रोही हो जाते हैं। इसके विपरीत जिनके अंदर सामाजिकता होती है उनमें सहनशीलता होती है, सहानुभूति होती है और दूसरों के साथ मिलकर रहने की भावना भी होती है।

7.3.4.4 मैक्रे तथा कोस्टा का पंच घटकीय सिद्धान्त

मनोवैज्ञानिक मैक्रे तथा कोस्टा के अनुसार मानव व्यक्तित्व के लक्षणों को पांच घटकों में बाँटा जा सकता है।

- 1) *अनुभवों के लिए खुलापन*: ऐसे लोग बहुत सक्रिय होते हैं, उनके अन्दर उत्सुकता भरी रहती है। वे कला और सौन्दर्य प्रेमी होते हैं। वे निरपेक्ष, विचारक होते हैं और प्रायः लीक से हटकर चलते हैं। तरह-तरह के काम करने में उनकी विशेष रुचि होती है।
- 2) *अंतर्विवेकशीलता* : इस श्रेणी में आने वाले लोग लक्ष्य परक होते हैं। वे अपने पर नियंत्रण रखते हुए कठोर परिश्रम करने, ईमानदारी का व्यवहार करने तथा अपनी क्षमताओं को निरंतर बढ़ाते जाने में विश्वास रखते हैं। उनका जीवन सुव्यवस्थित होता है और वे अपने आपको अस्त-व्यस्त नहीं होने देते।
- 3) *बहिर्मुखता* : इस श्रेणी में वे लोग आते हैं जो बाहरी जगत से प्रतिक्रियाएँ एकत्रित करना पसंद करते हैं। दूसरों से संबंध/संपर्क बढ़ाना उन्हें अच्छा लगता है।
- 4) *सहमतिशीलता* : ऐसे लोग दूसरों के कामों में अड़ंगा नहीं डालते, ना ही मन में विरोधी भाव पालते हैं। ये प्रायः सहयोगी स्वभावक के होते हैं, दूसरों की मदद करना उन्हें बहुत अच्छा लगता है। ये लोग दूसरों का विश्वास अर्जित करने में सबसे आगे रहते हैं।
- 5) *मनोविक्षुब्धता* : ऐसे लोगों का मन स्थिर नहीं रहता। वे प्रायः चिन्तित रहते हैं, असुरक्षा की ग्रंथि से पीड़ित होते हैं और दयनीय जीवन जीते हैं। लेकिन फिर भी इस श्रेणी में आने वाले लोग यदि अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रख सकें तो वे जीवन में संतोष और सुरक्षा दोनों ही प्राप्त कर लेते हैं।

7.3.5 व्यक्तित्व की भारतीय अवधारणा

मनुष्यों की प्रकृति और उनके व्यक्तित्व के बारे में गहरी समझ रही है। भारत में ऐसे वैज्ञानिक ढांचे पहले से ही मौजूद हैं जो आधुनिक मनोविज्ञान के व्यक्तित्व के सिद्धान्तों के संकेत देते हैं। संस्कृत में एक शब्द है स्वभाव, यह शब्द मनुष्य के व्यक्तित्व स्थाई विशेषताएँ बताता है। एक दूसरा शब्द है प्रकृति जो सांख्य पद्धति से लिया गया है। यह 'प्रकृति' सभी घटनाओं तथा मनुष्यों में अंतर्निहित विशेषताओं को प्रतिबिम्बित करती है। प्रकृति के तीन गुण होते हैं सत्त्व, रजस, और तमस। सतोगुण, ज्ञान एवं बौद्धिकता का प्रतीक हैं। जो गुण ऊर्जा और गति के प्रतीक हैं, और तमोगुण, अंधकार और जड़त्व का प्रतीक है। भगवद्गीता में इन तीनों गुणों का विशद वर्णन किया गया है।

- 1) *सतोगुण* : जब व्यक्ति में सतोगुण प्रधान होता है तब उस में भावात्मक स्थिरता आ जाती है और वह व्यक्ति अच्छे कार्यों के प्रति समर्पित होता है एवं दूसरों की परवाह करता है।
- 2) *रजोगुण* : रजोगुण प्रधान व्यक्ति भावनात्मक रूप से अत्यधिक क्रियाशील होते हैं।

ये लोगों के प्रति लगाव रखते हैं, उत्सुकता और प्रफुल्लता से भरे रहते हैं, विभिन्न कार्यों में रुचि लेते हैं।

- 3) **तमोगुण** : जब किररी व्यक्ति की प्रकृति तमोगुण प्रधान हो जाती है तो उसो आलस्य और अज्ञान घेर लेता है। ऐसे में यदि कोई व्यक्ति अपनी इच्छा शक्ति को जागृत करके तमोगुण की नकारात्मक प्रवृत्तियों से मुक्ति पा सके तो वह बहुत परिश्रमी और सफल साबित हो सकता है।

बोध प्रश्न 2

- 1) व्यक्तित्व के बारे में मैस्लों के विचारों का वर्णन कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

- 2) अल्पोर्ट द्वारा वर्णित व्यक्तित्व के तीन प्रकार के लक्षणों की व्याख्या कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

- 3) बृहत् पंच घटकीय सिद्धान्तों के पांच घटकों की सूची तैयार कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....

- 4) भारतीय मनोवैज्ञानिक के अनुसार व्यक्तित्व की तीन प्रकृतियां कौन-कौन सी होती हैं?

.....
.....
.....
.....
.....

7.4 व्यक्तित्व मापन

विभिन्न विधियों द्वारा व्यक्तित्व का मापन किया जाता है। मनोवैज्ञानिकों तथा मनोचिकित्सकों को, जब किसी व्यक्ति की चिन्ता व तनाव जनित मानसिक दुरावस्था की जांच करनी होती है, तो वे उसका व्यक्तित्व परीक्षण करते हैं। औद्योगिक संस्थानों के मनोवैज्ञानिक कर्मचारियों के चयन से पहले उनकी मानसिक दशा का व्यक्तित्व का निरीक्षण करते हैं। स्कूलों में मनोविश्लेषक सलाहकार बच्चों के व्यक्तित्व में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान तलाशने के लिए उन्हें परामर्श देते हैं। व्यक्तित्व को समझ लेने से उसमें वांछित सुधार किए जा सकते हैं जिससे व्यक्ति में प्रवीणता उत्पन्न हो जाती है। वह अपने कामों को बेहतर ढंग से करने की क्षमता अर्जित कर लेता है। प्रशासनिक कार्यों में कुशलता अर्जित की जा सकती है, परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किए जा सकते हैं तथा आनुवांशिक रूप से उपयोगी उपाय किए जा सकते हैं। जिससे,

- रोगियों के रोग का ठीक से पता लगाया जा सकता है
- तदानुसार मनोचिकित्सकों की मदद ली जा सकती है
- व्यक्तियों के व्यवहार के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है तथा उसके अनुसार सुधार के लिए समुचित मनोवैज्ञानिक तरीके अपनाए जा सकते हैं। (जैसे, नैदानिक, फोरेंसिक, संगठनात्मक, शैक्षणिक)

व्यक्तित्व निर्धारण की उपयुक्त परिभाषा से यह पता लगता है कि व्यक्तित्व का आंकलन अत्यंत दक्ष व्यक्ति ही कर सकते हैं। आंकलन करने वाले को साइकोमेट्रिक परीक्षण की पूरी जानकारी होनी चाहिए। उन्हें व्यक्तित्व के सिद्धांतों तथा संबंधित व्यवस्थाओं की व्याख्या करने में निपुण होना चाहिए। तब ही वे व्यक्तित्व का सही आंकलन कर सकते हैं। व्यक्तित्व का अध्ययन करने और समझने के लिए आधुनिक युग में अनेक उपाय किए जाते हैं। कुछ उपायों का विवरण इस प्रकार है -

7.4.1 कागज और पेंसिल परीक्षण

व्यक्तित्व के अध्ययन के लिए कागज और पेंसिल टैस्ट बहुत लोकप्रिय है। इसे अनेक प्रकार के प्रयोग में लाया जा सकता है। इनमें से एक प्रकार है अपने बारे में जानकारी का विवरण प्रस्तुत करना अथवा प्रश्नों के उत्तर देना। इस प्रक्रिया में कुछ सरल प्रश्न पूछे जाते हैं और व्यक्ति को दिए हुए दो या तीन विकल्पों में से एक को चुनना होता है उत्तर देते समय वे 'हां' कह सकता है, या 'नहीं' कह सकता है अथवा 'कोई नहीं' कह सकता है। इन प्रश्नों के उत्तर 'सही या गलत' में नहीं दिए जाते हैं और उत्तर देने की कोई समय सीमा नहीं रखी जाती। लगभग सभी प्रश्न इसी तरह के होते हैं जिनके उत्तरों से व्यक्ति के व्यक्तित्व का पता लगाया जा सकता है। **मिनीसोटा बहुभाषी व्यक्तित्व सूची** सबसे ज्यादा लोकप्रिय तरीका है। मनोचिकित्सक द्वारा रोगी के व्यक्तित्व को समझने का। इसके आधार पर मनोचिकित्सक रोगी को उचित परामर्श दे सकता है। यह तकनीक हैथवे तथा मैकलिन द्वारा 1943 में विकसित की गई थी और इसमें अनेक बार संशोधन किए जा चुके हैं। इनमें सबसे अधिक संशोधित और व्यावहारिक तकनीक एमएमपीआई-2 है। इसे किशोरों, नशेड़ियों आदि पर आजमाया जा सकता है। इस प्रविधि के अन्दर जो प्रश्न पूछे जाते हैं उनके उत्तर में रोगी 'सही', 'गलत' या 'कह नहीं सकते', तीनों में से कोई एक विकल्प चुनता है। 1983 में जोशी और मलिक ने **जोधपुर मल्टीफेसिक पर्सनाल्टी इन्वेंट्री** का भारत में निर्माण किया था; जिसमें मनः स्नायु विकृति (तंत्रिका रोग) मनोविकृति, मनोदैहिक विकृतियों तथा वैद्यता सूचकांक का पता लगाया जाता है और उनकी चिकित्सा की जाती है।

केलीफोर्निया पर्सनैल्टी इंडेन्ट्री (गुफ, 1969) में सामान्य व्यक्तियों के लक्षणों, जैसे आत्म-स्वीकृति, उपलब्धियां, प्रभुत्व आदि, का आंकलन किया जाता है। एडवार्ड पर्सनल प्रीफ्रेंस शैड्यूल : प्रभुत्व की इच्छा, जरूरतों आदि का आंकलन करने में सक्षम है (एडवार्ड, 1954)। मिलन क्लिनिकल मल्टिप्लिशल इंडेन्ट्री, 1987, 1997 तथा नियो पर्सनैल्टी इंडेन्ट्री (कोस्टा एवं मेक्रे, 1989) में व्यक्तित्व के पंच घटकीय मॉडल के आधार पर व्यक्तित्व का पता लगाया जाता है। मेयर्स-ब्रिग्स टाईप इंडेन्ट्री - मेयर्स एण्ड मेकॉले, 1985 में संवेदना, सोच, भावनाओं तथा अंतर्ज्ञान के अध्ययन के आधार पर व्यक्तित्व का आंकलन किया जाता है।

फिर भी व्यक्ति-सूची तथा कागज पेंसिल टैस्ट के परिणाम पूरी तरह पूर्ण नहीं होते, इनकी अपनी सीमाएं हैं। पहली बात यह है कि जिनसे प्रश्न पूछे जाते हैं वे अनेक कारणों से बिल्कुल वही जवाब नहीं देते जो उनके अंदर के व्यक्तित्व को उजागर कर सके। दूसरा यह कि परिचितता प्रभाव के कारण आंकलन ठीक नहीं हो पाता। लोगों की प्रायः यह आदत होती है कि वे अधिकतर प्रश्नों के जवाब 'हां' में दे जाते हैं। वे दबाव मुक्त नहीं रह पाते और एक बात यह भी है कि व्यक्ति सूची संस्थानों का संचालन अच्छे पढ़े-लिखे तथा विशेष रूप से जानकार व्यक्ति ही कर सकते हैं।

7.4.2 प्रेक्षणी तकनीक

प्रेक्षणी तकनीक प्रायः व्यक्तिपरक होती हैं। जो सीमाएं कागज व पेंसिल परीक्षण में पाई जाती हैं, वे प्रेक्षणी तकनीक में नहीं होतीं, इसीलिए इसके माध्यम से व्यक्तित्व का बेहतर आंकलन संभव है। अचेतन प्रेक्षणी परीक्षण व्यक्तित्व के अदृश्य गुणों को समझने में सहायता कर सकता है। यह तकनीक मानकीकृत उजागर उत्तेजनाओं के आधार पर काम करती है, इस तकनीक का प्रयोग करने पर व्यक्ति अपने अंदर जो कुछ देखता है, वही बताता है। इच्छाएं, भय तथा मूल्य उभर कर उद्दीपन में आ जाते हैं। जैसा कि रौटर का इंकम्पलीट सेंटेंस ब्लॉक (रोटर, 1950), बताता है, जो कुछ लोग बोलते हैं वह पूरे वाक्यों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा पाता। आधे-अधूरे शब्दों को जोड़कर अर्थ निकालना पड़ता है।

हैनरी मुरे तथा क्रिस्टीना मोरगन ने 1935 में थीमेटिक एपरसेप्शन टेस्ट (TAT) का विकास किया था। इस टैस्ट में विभिन्न प्रकार के 20 कार्ड होते हैं जिनमें अस्पष्ट चित्र बने होते हैं। ये कार्ड उन व्यक्तियों को दिए जाते हैं जिनका व्यक्तित्व-परीक्षण होना है। उस व्यक्ति से यह कहा जाता है कि वह चित्र के आधार पर एक कहानी लिखे, उस कहानी के नायक तथा कहानी के उद्देश्य के बारे में लिखे। जब वह व्यक्ति कहानी लिखता है तो उसमें उसका निजी व्यक्तित्व, उसकी सोच, उसकी भावनाएं, जीवन के प्रति दृष्टि ब्यौरा आदि उतर आते हैं।



चित्र 7.4: टीएटी कार्ड का चित्रण

एक और टेस्ट होता है **रॉशार्क टैस्ट (1921)**। इस टेस्ट में व्यक्तित्व का आंकलन करने की क्षमता होती है। हर कार्ड पर एक स्याही का धब्बा होता है। व्यक्ति से कहा जाता है कि वह बताये कि धब्बे में उसे क्या नजर आ रहा है। इसे देखकर उन्हें किस की स्मृति हो रही है। जितनी जानकारियाँ व्यक्ति मनोविज्ञानी को देता है, उसके आधार पर वह व्यक्तित्व का पता लगा लेता है। हर स्याही के धब्बों के लिए पहले से ही कुछ अंक निर्धारित होते हैं (एकजनर, 1993)। परन्तु एक बात जरूर है कि प्रेक्षणी तकनीक विशिष्ट व्यक्ति परक होती है। अतः उसके परिणाम वस्तुनिष्ठ तरीकों से आए परिणामों की तुलना में कम विश्वसनीय होते हैं।

7.5 सारांश

इस इकाई के अंत में उस सब का सारांश प्रस्तुत किया जाएगा जिसका हमने विस्तार से वर्णन किया है।

- व्यक्तित्व का अध्ययन करते समय दो आयामों पर विचार करना होता है : एक है व्यक्तिगत विभिन्नताएं तथा दूसरा है व्यक्तिगत विशेषताएं जैसे कि सामाजिकता। इसके बाद यह समझना होता है कि व्यक्ति के विभिन्न अंगसमग्र रूप से मिलकर कैसे काम करते हैं।
- व्यक्तित्व का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त तीन महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर आधारित है एक है व्यक्तित्व की संरचना में तीन घटक होते हैं इड, अहं तथा पराहम। दूसरा है व्यक्तित्व की गत्यात्मकता जिसमें चेतन, अचेतन तथा अचेतन की प्रेरकता तथा अहंकार सुरक्षा प्रणाली व्यक्तित्व को आकार प्रदान करती है। तीसरा है विभिन्न यौन व्यवहार अवस्थाएँ जो विकास की प्रक्रिया के साथ-साथ अस्तित्व में आती हैं। उनके दौरान शरीर के विभिन्न अंगों में विशेष लक्षण देखे जा सकते हैं जिनसे व्यक्ति की वयस्कता का पता लगता है।
- अनेक सिद्धान्तकारों ने फ्रायड का अनुसरण किया। कुछ सिद्धान्तकार जिन्होंने आरम्भ में फ्रायड के साथ काम किया था, बाद में फ्रायड के विचारों से सहमत नहीं हुए और उन्होंने अपने सिद्धान्तों का विकास कर लिया। अपनी अलग पहचान बनाने के लिए उन्होंने अपने आपको नव-फ्रायडवादी, नवविश्लेषणात्मक अथवा मनोगतिक कहा। इनमें से कुछ प्रमुख सिद्धान्तकारों के नाम हैं अल्फ्रेड एडलर, कारेन हॉर्नी, एरिक फ्रॉम, कार्ल युंग, एरिक एरिकसन, आदि।
- व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्वक मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त की कुछ आलोचना की। वे इस बात को मानने को तैयार नहीं थे कि मानव व्यक्तित्व को उसके मानस और अचेतन मन से समझाया जा सकता है। जॉन बी. वाटसन तथा बी. एफ स्किनर सबसे अधिक प्रभावशाली व्यवहारवादी सिद्धान्तकार थे।
- मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्तकारों तथा व्यवहारवादियों के सिद्धान्तों के विरुद्ध व्यक्तित्व के मानवतावादी सिद्धान्त का जन्म हुआ। अब्राहम मैस्लो तथा कार्ल रोजर्स प्रमुख मानवतावादी सिद्धान्तकार के रूप में जाने जाते हैं। मानवतावादी सिद्धान्त व्यक्ति के निजत्व के माध्यम से यह जानने का प्रयास करते हैं कि व्यक्तित्व का विकास किस प्रकार होता है।
- व्यक्तित्व के लक्षणात्मक सिद्धान्त में विश्वास रखने वाले सिद्धान्तकार यह मानते हैं कि व्यक्ति के व्यवहार का आंकलन उसके व्यक्तित्व में स्थित समस्त लक्षणों के आधार पर

किया जा सकता है। व्यक्तियों के लक्षणों या विशेषताओं का अध्ययन करके यह बताया जा सकता है कि उनका व्यक्तित्व कैसा है।

- व्यक्तित्व की भारतीय अवधारणा व्यक्ति की प्रकृति अंतर्निहित तीन गुणों पर निर्भर करती है, ये तीन गुण हैं – सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण।
- व्यक्तित्व को मापने के लिए दो प्रमुख विधियां उपयोग में लाई जाती हैं, जैसे, कागज और पेन्सिल परीक्षण एवं प्रक्षेपीय तकनीक।

7.6 मुख्य शब्द

व्यक्तित्व	: किसी व्यक्ति के सोचने के अनुभव करने और व्यवहार करने के तरीकों में जो खास बातें होती हैं उन्हें उस व्यक्ति का व्यक्तित्व कहा जाता है।
लक्षण	: लक्षणों के अंतर्गत व्यक्ति के विचार, भावनायें तथा व्यवहार आदि आते हैं। इनके आधार पर किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आंकलन किया जा सकता है।
प्रमुख लक्षण	: किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में पाये जाने वाले ये सबसे खास लक्षण हैं। अल्पोर्ट ने लक्षणों की सूची में इन लक्षणों को सबसे पहले स्थान दिया है। ये लक्षण व्यक्ति के व्यक्तित्व को संचालित करते हैं। यदि किसी व्यक्ति में ये लक्षण अत्यधिक उभर कर सामने आ जाते हैं तो संबंधित क्षेत्र में वह व्यक्ति इतना प्रसिद्ध हो जाता है कि ये लक्षण उसकी पहचान बन जाते हैं।
केन्द्रीय लक्षण	: अल्पोर्ट के अनुसार हर व्यक्ति में पांच से दस तक केन्द्रीय लक्षण विभिन्न अनुपातों में पाए जाते हैं। ये लक्षण स्पष्ट दिखते हैं तथा किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के निर्माण के लिए ये जिम्मेदार होते हैं। प्रमुख केन्द्रीय लक्षण बुद्धिमत्ता, वफादारी, आश्रितता, आक्रामकता आदि।
माध्यमिक लक्षण	: ये वे लक्षण हैं जिनकी व्यक्तित्व निर्माण में भूमिका अपेक्षाकृत कम रहती है। इनका उदय खास स्थितियों और परिस्थितियों में होता है।
इड	: व्यक्तित्व का ये भाग अचेतन रूप से कार्य करता है। इसका संबंध आधार भूत प्रवृत्तियों, शारीरिक आवश्यकताओं तथा आक्रामक आवेगों से होता है।
अवचेतन मन	: यह मस्तिष्क का वह भाग है जिसमें पूर्व संचित सूचनाएँ भरी रहती हैं। आमतौर पर मनुष्य को इनका आभास नहीं होता, विशेष ध्यान देने पर ही इनका आभास होता है।

निर्धारण

: जीवन की आरम्भिक अवस्था में प्राप्त संतुष्टि का आगे की अवस्था में बने रहना।

व्यक्तित्व

सामूहिक अचेतन

: सभी मनुष्यों के अचेतन का समुच्चय।

7.7 पुनरावलोकन प्रश्न

- 1) पहचान का 'इसे करो' से वही संबंध है जो पराहम को हैं -
 - अ) "देर तक प्रतीक्षा करो" से
 - ब) "अपना काम करो" से
 - स) "इसे मत करो" से
 - द) "बस चुपचाप बैठे रहो" से।
- 2) लक्षणों को निम्न में से मनुष्य की कौन सी विशेषताओं से संबंधित माना जाता है।
 - अ) शारीरिक।
 - ब) अपेक्षाकृत स्थायी तथा लम्बे समय तक रहने वाला।
 - स) स्थिति जन्य।
 - द) समूह का अंश।
- 3) सिद्धान्त अधिकतम तथा सिद्धान्त न्यूनतम अचेतन की भूमिका
 - अ) लक्षण, मानवतावादी
 - ब) मनोविश्लेषणात्मक, व्यवहारवादी
 - स) मनोविश्लेषणात्मक, मानवतावादी
 - द) लक्षण, व्यवहारवादी
- 4) वे मनोवैज्ञानिक जो यह मानते हैं कि मनुष्य जीवन पर्यंत बढ़ते और विकसित होते रहते हैं तथा वे स्वाभाविक रूप से अच्छे होते हैं, कहे जाते हैं
 - अ) मनोविश्लेषणवादी
 - ब) उग्रव्यवहारवादी
 - स) समाजज्ञाता सिद्धान्तकार
 - द) मानवतावादी
- 5) व्यक्तित्व के पंच घटकीय मॉडल की व्याख्या कीजिये।
- 6) फ्रायड के व्यक्तित्ववादी सिद्धान्त में अचेतन का इतना महत्व क्यों है?
- 7) व्यक्तित्व के विश्लेषणात्मक सिद्धान्तकारों द्वारा वर्णित पांच सुरक्षा प्रणालियों की व्याख्या कीजिये।
- 8) व्यक्तित्व निर्धारण की विधियों का वर्णन कीजिये।
- 9) व्यक्तित्व के मानवतावादी सिद्धान्त का वर्णन कीजिये।

7.8 स्रोत एवं अन्य संदर्भ

- इंडिविजुअल डिफरेंसेज एण्ड पर्सनाल्टी, एकेडैमिक प्रैस, यू.एस.ए. एम. एस्टन, 2013
- साइकोलॉजी इंडियन सबकॉटिनेंट एडीशन, पर्सन एजुकेशन, दिल्ली आर. ए. एण्ड जी. मिश्रा, 2016
- साइकोलॉजी, पर्सन एजुकेशन लिमिटेड, न्यूयार्क एस. के. सिसरैली एण्ड जे. एन. हाइट, 2015
- इमोशनल एण्ड सोशल इंटैलिजेंस एण्ड बिहेवियर इन : एस. गोडस्टीन, डी. प्रिंसीचोटा, जे. नागलोरी हेंड बुक ऑफ इंटैलिजेंस श्रीनगर, न्यूयार्क आर. ई. बॉयजेज, जे. गार्स्केन, एच. बी, 2015
- पर्सनाल्टी एण्ड इंडिविजुअल डिफ्रेंसिज, जॉन विली एण्ड सन्स केमरो प्री मुजीक
- पर्सनाल्टी थ्योरीज : क्रिटीकल पर्सेप्टिब्स, सेज पब्लिकेशन ए एलिस, एम. अब्राहम एण्ड एल अब्राम्स, 2009
- हेंडबुक ऑफ साइकोलॉजी, वोल्यूम 5 पर्सनाल्टी एण्ड सोशल साइकोलॉजी एम. जे. लर्नर, टी. मिलन एण्ड आई वी वीनर, 2003
- 'ए कलैक्शन ऑफ डैफिनेन्स ऑफ इंटैलिजेंस' फ्रंटियर्स इन आर्टोफीसियल इंटैली जेंस एण्ड एप्लीकेसन्स 157, 17 एस लैंग एण्ड एम. हट्टर, 2007
- इंडिविजुअल डिफ्रेंसिज एण्ड डिफ्रेंसियल साइकोलॉजी, द विली ब्लैक वैल हेंडबुक ऑफ इंडिविजुअल डिफ्रेंसिज 1 38. जे. डब्ल्यू. विल्ट, रिचैली एण्ड डी एम कंडन, 2011
- थ्योरीज ऑफ पर्सनाल्टी, सेंगेज लर्निंग दिल्ली, इंडिया डी. पी. शुल्ज एण्ड एस. ई. शुल्ज, 2013

7.9 चित्रों के लिए संदर्भ

- Diagram of Freud's psyche theory. Retrieved October 6, 2018 from <https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Structural-Iceberg.svg>
- Extrovert-Introvert Spectrum. Retrieved October 6, 2018 from <https://commons.wikimedia.org/wiki/File:ExtrovertIntrovertSpectrum.png>.

7.10 ऑनलाइन स्रोत

- For information on Psychodynamic theory, visit
 - <https://courses.lumenlearning.com/suny-hccc-ss-152-1/chapter/freuds-psychoanalytic-theory/>
 - <http://journals.iupui.edu/index.php/advancesinsocialwork/article/view/140>
 - <https://nobaproject.com/modules/the-psychoanalytic-perspective>
- For more on Behaviourist Theory of Personality, visit
 - <https://www.simplypsychology.org/behaviorism.html>

- <https://chasqueweb.ufrgs.br/~slomp/edu01011/watson-behaviorist.pdf>
- <https://plato.stanford.edu/entries/behaviorism/>
- To learn more about Trait Theory of Personality, visit
 - http://www.ep309.org/faculty/LAMBJEN/Chapter6/trait_theories_of_personality.pdf
 - http://www.ufrgs.br/psico-laboratorio/textos_classicos_3.pdf
 - <https://courses.lumenlearning.com/boundless-psychology/chapter/trait-perspectives-on-personality/>

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1 (स), 2 (ब), 3 (ब), 4 (द)



इकाई 8 बुद्धि*

रूपरेखा

- 8.0 सीखने का उद्देश्य
- 8.1 प्रस्तावना
- 8.2 बुद्धि की परिभाषा संप्रत्यय
 - 8.2.1 बुद्धि पर आनुवंशिकता बनाम वातावरण विवाद
- 8.3 बुद्धि के सिद्धांत
 - 8.3.1 स्पीयरमैन बुद्धि का सिद्धांत
 - 8.3.2 थर्स्टन बुद्धि का सिद्धांत
 - 8.3.3 स्टर्नवर्ग का बुद्धि सिद्धांत
 - 8.3.4 गार्डनर का बुद्धि सिद्धांत
 - 8.3.5 कैटल का बुद्धि सिद्धांत
 - 8.3.6 पास सिद्धान्त
 - 8.3.7 प्रोद्योगिक बुद्धि का सिद्धांत
 - 8.3.8 अविभाज्य बुद्धि का सिद्धांत
- 8.4 बुद्धि की माप
 - 8.4.1 बुद्धि परीक्षण के प्रकार
 - 8.4.1.1 वैयक्तिक और समूह बुद्धिपरीक्षण
 - 8.4.1.2 शाब्दिक और अशाब्दिक परीक्षण
 - 8.4.1.3 संस्कृति निष्पक्ष परीक्षण एवं सांस्कृतिक पक्षपात परीक्षण
- 8.5 सारांश
- 8.6 मुख्य शब्द
- 8.7 पुनरावलोकन प्रश्न
- 8.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव
- 8.9 चित्रों का संदर्भ
- 8.10 ऑनलाइन स्रोत

8.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात्, आप निम्नलिखित बातों को समझ पाएँगे:

- बुद्धि का स्वरूप संप्रत्यय;
- बुद्धि के आनुवंशिकता बनाम वातावरण पर विवाद;
- बुद्धि के विभिन्न सिद्धान्तों की तुलना और सारांश;
- बुद्धि को मापने के लिए प्रयोग होने वाले विभिन्न तरीके; तथा
- विभिन्न प्रकार के बुद्धि परीक्षण का वर्णन।

* डॉ. आरती सिंह, इग्नू, नई दिल्ली एवं डॉ. मीतू खोसला, एसोसिएट प्रोफेसर ऑफ साइकोलोजी, दौलत राम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

8.1 प्रस्तावना



चित्र 8.1: भारतीय वंडरकिड प्रियाशी सोमानी

प्रियांशी सोमानी ने 16 नवम्बर 1998 को जन्म लिया जिनका दिमाग एक मानसिक गणना यन्त्र की तरह है और जो मानसिक गणक विश्व कप, की सबसे कम उम्र की प्रतिभागी थी और जिन्होंने पद को जीत कर भारत को गौरवन्वित किया। केवल ये ही ऐसी भागीदार थी जिन्होंने सभी 5 मानसिक गणक विश्वकप में जोड़, गुणा, वर्गमूल में 100 प्रतिशत प्राप्त किया।

स्रोत : <http://www.indiatimes.com/culture/>

ऊपर के उदाहरण में ऐसी कौन सी बात है जिसने इस बच्चे को, अपनी आयु के अन्य बच्चों से अद्भुत बनाया? या ऊपर के उदाहरण में इनके अन्दर अपने हम उम्र बच्चों से अलग ऐसी कौन सी ऐसी बात थी जिसने चमत्कारी बनाया। क्या यह जन्मजात थी या गणित की समस्या को हल करने में इनको प्रशिक्षित किया गया था? कभी मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस तरह के बुद्धिमय व्यवहार को वर्णित करने के लिए विभिन्न सिद्धान्त विकसित किए गए। इस इकाई में हम बुद्धि के संप्रत्यय, बुद्धि के सिद्धान्त एवं बुद्धि के मापने के तरीके की चर्चा करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के पश्चात, उन कारकों को पहचानने की कोशिश कीजिएगा जो इस तरह के बच्चे की विलक्षणता का सही तरीके से वर्णन करते हैं और अपने दोस्तों के साथ इसकी चर्चा कीजिएगा।

8.2 बुद्धि की परिभाषा और संप्रत्यय

बुद्धि के अन्तर्गत कई तरह की योग्यताएँ एक साथ आती हैं। ये मिलने वाली सूचनाओं को समझकर उसका अर्थ निकालने की क्षमता है। यह नए गुणों को प्राप्त करने और मौजूदा ज्ञान में इसका प्रयोग करके कार्य को पूरा करने या परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता है। बुद्धि के अन्तर्गत नए उद्दीपनों को समझने, भाषा को सीखने और दूसरों के साथ संबंध रखने, वातावरण के प्रति जागरूक होने, तर्क करने, योजना बनाने और समस्या की रचनात्मकता के साथ समाधान करने की क्षमता आती है। वेचस्लेर (1944) के अनुसार बुद्धि व्यक्ति की एक समुच्चय या सार्वजनिक क्षमता है जिसके सहारे व्यक्ति उद्देश्यपूर्ण क्रिया करता है, विवेकशील चिन्तन करता है तथा वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से समायोजन करता है।" भारतीय परिदृश्य में बुद्धि को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति की

अनुकूलन अन्तःशक्ति के रूप में देखा जाता है। यह केवल संज्ञानात्मक क्षेत्र को प्रस्तुत नहीं करता है। यह अनुकूलन अन्तःशक्ति कई तरह की योग्यताओं से बना होता है जो व्यक्ति को उसके जीवन की समस्या से उबरने/आगे बढ़ने एवं जो वह बनना चाहता है वह बनने में, उसकी मदद करता है। श्रीवास्तव और मिश्रा (1997) के अनुसार बुद्धि में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है। ये भिन्नता व्यक्ति को उसके जीवन के मसलों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता को प्रभावित करती है। जिनको आईक्यू परीक्षण में 70 से कम अंक प्राप्त होते हैं उन्हें मानसिक रूप से निर्बल/अक्षम माना जाता है। मानसिक निर्बलता के स्तर में भी भिन्नता पाई जाती है। यह व्यक्ति के रोज के कार्यों या साधारण कार्यों को करने की क्षमता को सीमित कर देता है। वे ऐसे लोग शैक्षिक क्षेत्र और जीवन की कुशलताओं में कमजोर होते हैं। इनके अन्दर सामाजिक एवं व्यावसायिक कौशल को सवारने की कोशिश की जाती है। बुद्धि में लिंग विभिन्नता भी पाई जाती है। औरतें और लड़कियाँ मौखिक कार्यों में बेहतर पाई गई है जबकि आदमी व लड़के प्रदर्शन कार्यों में बेहतर पाये गये हैं। बुद्धि के स्तर में अन्तर बौद्धिक रूप से उत्तेजित घरेलू वातावरण से भी प्रभावित होता है।

8.2.1 बुद्धि पर आनुवंशिकता बनाम वातावरण विवाद

क्यों कुछ लोग दूसरों से ज्यादा बुद्धिमान होते हैं? क्यों एक ही परिवार के भाई-बहन अभिषमता व बुद्धि के स्तर पर अलग-अलग होते हैं?

इन प्रश्नों व इनके जैसे और प्रश्नों का उत्तर देने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने आनुवंशिकता बनाम वातावरण विवाद का सहारा लिया। यह विवाद इस बात पर है कि मानव बुद्धि में अन्तर आनुवंशिकता का परिणाम है या वातावरण का। आगे बढ़ने के पहले चलिए समझते हैं कि आनुवंशिकता या वातावरण वास्तव में क्या हैं।

आनुवंशिकता यह आनुवंशिक कारकों से संबंध रखता है जो कि हमें हमारे माता-पिता से विरासत के रूप में मिलता है जैसे कि लम्बाई या त्वचा का रंग।

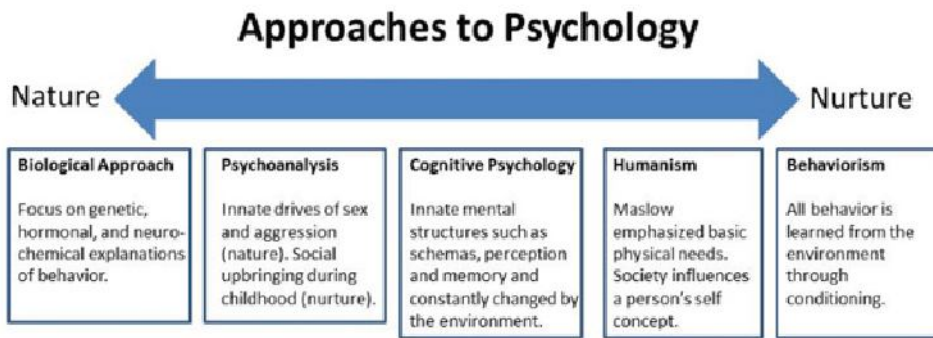
पालन पोषण/वातावरण यह वातावरण के उन सभी कारकों से संबंध रखता है जो हमें प्रभावित कर सकता है जैसे कि पालन-पोषण का तरीका, परिवार, सामाजिक आर्थिक परिस्थिति, सामाजिक समर्थन, सांस्कृतिक कारक और ऐसी सभी चीजें जो व्यक्ति के बाहर मौजूद होती है।



चित्र 8.2 : आनुवंशिकता बनाम पर्यावरण विवाद

स्रोत : <http://www.everywellmind.com/>

आनुवंशिकता या वातावरण में कौन ज्यादा महत्वपूर्ण है यह एक पुराना व अनसुलझा हुआ विवाद है। वो लोग जो यह मानते हैं कि हमारी बुद्धि पूरी तरह से आनुवंशिक कारणों से संचालित होते हैं उन्हें सहजजातवादी कहते हैं। जो लोग इनके विचारों का समर्थन करते हैं उनका मानना है कि मानव व्यवहार में अन्तर विभिन्न आनुवंशिक रचना का परिणाम होता है। इस विवाद के दूसरे विचार को समर्थन करने वाले अनुभववादी कहलाते हैं। इनका यह मानना है कि व्यक्ति का बुद्धि के स्तर पर एक दूसरे से अलग होना उनके अपने अनुभव या वातावरणीय कारकों पर निर्भर करता है। इस विचारधारा के जाने माने व प्रतिष्ठित समर्थकों में से एक जॉन लाक हैं जो मानव मस्तिष्क को एक कोरा कागज की तरह मानते हैं जो धीरे-धीरे हमारे जीवन के अनुभव से भरता है। चित्र 8.3 में मनोविज्ञान के विभिन्न दृष्टिकोणों द्वारा उठाए गए नेटिविस्ट बनाम अनुभववादियों को दर्शाता है।



चित्र 8.3: मनोविज्ञान में नेटिविस्ट बनाम अनुभववादी दृष्टिकोण

स्रोत: <https://www.simplypsychology.org/>

हालाँकि इस विवाद में समकालीन विचारकों के अनुसार किसी भी एक विचार को पूरी तरह से समर्थन देने पर मानव व्यवहार व व्यक्तिगत भिन्नता को समझ पाना मुश्किल होगा। हाल ही में किए गए कई अध्ययनों से यह ज्ञात होता है कि आनुवंशिक और वातावरणीय दोनों ही कारक बुद्धि को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उदाहरण के लिए शारीरिक विशेषता के रूप में एक व्यक्ति का कद आनुवंशिक और वातावरणीय दोनों ही कारकों से प्रभावित होता है। यदि बच्चे के माता-पिता लम्बे हैं और बच्चे में जन्मजात लम्बे कद से सम्बन्धित जीन्स आ जाते हैं तो बच्चा कितना लम्बा होगा यह उसके पालन पोषण पर निर्भर करता है। यदि बच्चे को उचित आहार/पालन पोषण नहीं मिल पाता है तो लम्बे कद का जीन्स ज्यादा प्रदर्शित नहीं होगा और वह अपने माता-पिता से कद में छोटा ही रह जाएगा। असामान्य मनोविज्ञान या मनोविकृति विज्ञान की पाठ्य पुस्तिका आनुवंशिकता व वातावरण अन्तःक्रिया से सम्बन्धित थी। ऐसे उदाहरण मिल जायेंगे जहाँ मानसिक विकार के प्रमुख कारणों को समझने में आनुवंशिक प्रवृत्ति और वातावरणीय कारक दोनों की ही सहायता ली जाती है।

बुद्धि के स्वरूप पर वैयक्तिक विभिन्नता की विवेचना करने में जीन्स (आनुवंशिक या स्वभाविक प्रवृत्ति) की भूमिका के पक्ष में प्रचुर मात्रा में प्रमाण उपलब्ध है जो कि ऐसे समरूप जुड़वा बच्चों पर अध्ययन करके निष्कर्ष निकाला गया था जिनका अलग-अलग जगहों में रखकर पालन पोषण गया था। इन अध्ययनों के पीछे का तर्क यह है कि यदि समरूप जुड़वा बच्चों को अलग अलग वातावरण में रखने के बावजूद इनका बुद्धि का स्तर लगभग एक जैसा होगा तो यह जीन्स को उत्तरदायी ठहराता है। यदि समरूप जुड़वा जिन्हें अलग-अलग पाला गया वे आपस में बुद्धि के स्तर में ज्यादा समानता दिखलाते हैं बजाय असमरूप उन जुड़वा बच्चे जिन्हें भी अलग-अलग प्रबल रूप से समर्थन करता है। इस प्रकार जन्मजात वैयक्तिक भिन्नता का सबूत मिलता है। इसके आधार पर शोधकर्ता यह निष्कर्ष निकालते हैं कि व्यक्ति

की बुद्धि को निर्धारित करने में वातावरण की भूमिका बहुत कम होती है (जेनसन, 1973)। द फ्लाइन् इफेक्ट आईक्यू पर वातावरण के प्रभाव के महत्व की बात करते हैं। संस्कृति वातावरण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। फ्लाइन् इफेक्ट के अनुसार आईक्यू का एक बड़ा हिस्सा हर दस वर्ष में तीन बिन्दु ज्यादा बढ़ जाता है। यूएस में औसत आईक्यू 1932 से 2002 के बीच लगभग 22 अंकों तक बढ़ गया। भारत में फ्लाइन् इफेक्ट का अध्ययन नहीं किया गया। हालांकि कुछ सीमित आईक्यू अंकड़े कम अंकों की ओर इशारा करते हैं। इस प्रकार वातावरणीय कारक जैसे कि कुपोषण, बीमारी एवं अशिक्षा सामान्य जनसंख्या में औसत से निम्न बौद्धिक अंक का कारण बनती है और यह परस्थिति आनुवंशिक क्षमता को आईक्यू के रूप में प्रदर्शित होने से रोकती है।

बोध प्रश्न 1

1) बुद्धि को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) बुद्धि पर आनुवंशिक बनाम पर्यावरणीय विवाद की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8.3 बुद्धि के सिद्धान्त

बुद्धि को एक खास तरीके से परिभाषित किया गया है लेकिन बुद्धि के संप्रत्यय को लेकर लोगों के विचार एक दूसरे से अलग हैं। कई तरह के विचार हैं जो अलग-अलग दृष्टिकोणों के माध्यम से बुद्धि की विवेचना एवं वर्णन करते हैं। सिद्धान्तवादियों का एक समूह मानसिक गुणों के समूह को एक ऐसे कारक के रूप में देखता है जो बुद्धि को बनाते है। इसका समूह बुद्धि को बौद्धिक प्रक्रियाओं के रूप में देखता है।

8.3.1 स्पीयरमैन का बुद्धि सिद्धान्त

चार्ल्स स्पीयरमैन (1904) के बुद्धि के सिद्धान्त को दो कारक सिद्धान्त के नाम से जाना जाता है। स्पीयरमैन ने पाया कि जो बच्चे एक विषय में अच्छे अंक लाते हैं वे अक्सर दूसरे विषय में भी अच्छे अंक प्राप्त करते हैं अपने इस अवलोकन से प्रेरित होकर उन्होंने यह विचार प्रस्तुत किया कि हमारे अन्दर कुछ सामान्य कारक होते हैं जो हमारे सभी व्यवहारों को प्रभावित करता है। कारक विश्लेषण जो कि एक सांख्यिकीय विधि है का प्रयोग करके इन्होंने बताया कि सभी संज्ञानात्मक क्रियाएँ या मानसिक क्रियाएँ दो कारकों से मिलकर बनती है। सामान्य या "g" कारक एवं विशिष्ट या "s" कारक "g" कारक व "s" कारक दोनों मिलकर बुद्धि

को बनाते हैं। g कारक सिद्धान्त या सामान्य कारक सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि सामान्य बुद्धि का अंगभूत है। g कारक मानसिक क्षमता के स्थूल क्रम से सम्बन्धित है जो अनेक प्रकार के संज्ञानात्मक गुणों के प्रदर्शन को प्रभावित करता है। s कारक एकल या विशिष्ट कारक होता है जो कि यह बताता है कि सभी संज्ञानात्मक गुण एक दूसरे से जुड़े होते हैं। इसलिए सामान्य बुद्धि, ज्ञान हासिल करने, अमूर्त चिंतन करने तथा नए परिस्थिति में सामंजस्य करने के लिए जिम्मेदार होती है।।

8.3.2 थर्स्टन का बुद्धि सिद्धान्त

एल एल थर्स्टन ने बुद्धि की सात प्रधान क्षमताओं के समूह पर जोर दिया है। इनका सिद्धान्त स्पीयरमैन के सिद्धान्त से काफी अलग है इनके अनुसार बौद्धिक क्रिया के प्रदर्शन में दिखने वाला अन्तर विभिन्न स्वतन्त्र क्षमताओं की वजह से होता है। ये स्वतंत्र क्षमताएँ निम्नलिखित हैं:

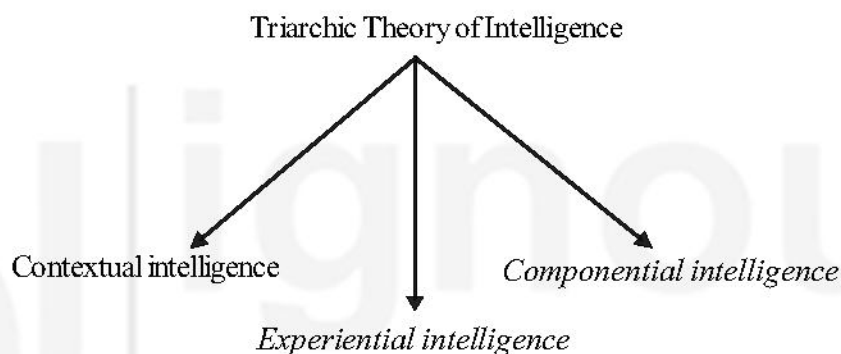
- i) *शब्द प्रवाह क्षमता* सोचने या शब्दों को तेजी से प्रयोग करने की क्षमता जैसे कि विपर्यय शब्द अर्थात् किसी शब्द अथवा वाक्य के अक्षर को इस प्रकार बदलना कि नए शब्द या वाक्य बन जाएँ ।
- ii) *शाब्दिक अर्थ क्षमता* शब्दों, संप्रत्यय या विचारों को सही ढंग से समझने की क्षमता। शब्दावली परीक्षण का प्रयोग शाब्दिक अर्थ क्षमता को मापने के लिए किया जा सकता है।
- iii) *स्थानिक क्षमता* अवस्था के किसी दिए हुए स्थान में वस्तुओं के आकार एवं परिचालन की क्षमता।
- iv) *अवधारणात्मक गति* हर उद्दीपक का सटीक रूप से जल्दी से विवरण देखने की प्रवृत्ति।
- v) *आंकिक क्षमता* आंकिक समस्या की परिशुद्धता एवं तीव्रता के साथ हल निकालने की क्षमता।
- vi) *विवेचनात्मक तर्क क्षमता* तथ्य को देखने व इससे कोई सामान्य नियम बनाने की क्षमता।
- vii) *स्मृति* परिशुद्धता व तीव्रता के साथ (चीजों/तथ्यों/घटनाओं को) याद करने की क्षमता।

8.3.3 स्टर्नबर्ग का बुद्धि सिद्धान्त

राबर्ट स्टर्नबर्ग (1988ए, 1997बी) ने बुद्धि का त्रिपदीय सिद्धान्त विकसित किया। जिसके अनुसार बुद्धि तीन तरह की होती है। पहली व्यावहारिक बुद्धि है। दूसरी सृजनात्मक बुद्धि और तीसरी आलोचनात्मक बुद्धि है। व्यावहारिक बुद्धि में रोजमर्रा के मामलों से निपटने की क्षमता है। प्रासंगिक बुद्धि या व्यावहारिक बुद्धि वातावरण या परिस्थिति की मांग के साथ सामंजस्य बैठाने की क्षमता को दर्शाता है। इसके अन्तर्गत ज्ञान व सूचनाओं का वास्तविक संसार में प्रयोग किया जाता है और इस प्रकार विभिन्न परिस्थितियों से सफलतापूर्वक सामंजस्य बैठाने की कोशिश की जाती है। यहाँ सामंजस्य से मतलब वर्तमान परिस्थिति के साथ सामंजस्य रखना और अपनी जरूरत को पूरा करने के लिए अपनी परिस्थिति को सुधारना तथा परिवर्तन करना दोनों ही है। जिन लोगों के अन्दर ऐसी बुद्धि ज्यादा होती है वे चालाक और अक्सर अपने जीवन में सफल होते हैं।

सृजनात्मक बुद्धि से तात्पर्य किसी परिस्थिति या समस्या का सामना करने या हल निकालने के लिए नए विचार विकसित करने की क्षमता से है। अनुभवजन्य बुद्धि (Experiential intelligence) या सृजनात्मक बुद्धि (creative intelligence) नए विचार या समस्या समाधान को विकसित करने की क्षमता है। इस बुद्धि में उच्च प्राप्तांक वाले व्यक्ति सृजनशील होते हैं। इनके अन्दर पुराने अनुभवों को नए आविष्कार करने में प्रयोग करने की क्षमता होती है।

विश्लेषणात्मक बुद्धि के अन्तर्गत संक्षिप्त रूप से सोचने और मूल्यांकन करने की क्षमता आती है। घटकीय बुद्धि (componential intelligence) जिसको विश्लेषणात्मक बुद्धि के रूप में जाना जाता है, को मापने के लिए क्रमागत बुद्धि (traditional intelligence) परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। जो लोग इस बुद्धि परीक्षण में उच्च प्राप्तांक प्राप्त करते हैं वे लोग क्रमागत/पारम्परिक बुद्धि अनुपात (traditional intelligence Quotient (IQ)) परीक्षण में भी अक्सर उच्च प्राप्तांक प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति के अन्दर उच्च मात्रा में विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमताएँ पाई जाती हैं और ऐसे लोग ज्यादातर शैक्षिक कार्य एवं विद्यालयों में अच्छा प्रदर्शन दिखलाते हैं। ऐसे लोग गणित एवं शाब्दिक गुणों में भी अच्छे होते हैं।



चित्र 8.4: स्टेनबर्ग का त्रिपदीय सिद्धान्त

8.3.4 गार्डनर का बुद्धि सिद्धान्त

हॉवार्ड गार्डनर (1993बी, 1999ए) बुद्धि के पारम्परिक विचार का खंडन करते हैं जिसमें बुद्धि को तार्किक विवाद की क्षमता के रूप में देखा जाता है। इनके अनुसार बुद्धि का स्वरूप एकाकी ना होकर बहु-कारकीय होता है। जिसमें कई तरह की बुद्धि एक साथ कार्य करती है। इनके अनुसार बुद्धि “समस्या या विशेष उत्पाद जो कि किसी विशेष संस्कृति या समुदाय के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है, का हल निकालने की क्षमता है। 1993 शुरु में इन्होंने सात तरह के अलग-अलग बुद्धि प्रकारों को प्रस्तुत किया जो कि निम्नलिखित है :

- 1) **भाषाई बुद्धि** : जो लोग इस तरह की बुद्धि पर उच्च प्राप्तांक प्राप्त करते हैं वे भाषाई क्षमताओं/गुणों में अच्छे होते हैं अर्थात् वे अपने विचारों को उचित शब्दों का इस्तेमाल/प्रयोग करके आसानी से स्पष्ट उच्चारण (साफ बोलना) के साथ प्रकट कर सकते हैं। वे शब्दों के साथ जोड़-तोड़ आसानी से कर सकते हैं। कवि और लेखक जैसे लोगों में उच्च मात्रा में भाषाई क्षमता पाई जाती है।
- 2) **संगीतिक बुद्धि** : इस बुद्धि पर उच्च प्राप्तांक प्राप्त व्यक्ति, संगीत को लेकर संवेदनशील व ज्ञानवर्धक होते हैं। वे संगीत के ढांचे में जोड़-तोड़ करके नए संगीत का सृजन कर सकते हैं जिन लोगों में ऐसी बुद्धि पाई जाती है वे अच्छे गायक, संगीत वादक व अच्छे संगीतज्ञ (संगीत देने वाले) होते हैं।

- 3) **तार्किक-गणितीय बुद्धि** : इस तरह की बुद्धि में, मूर्त समस्याओं पर तार्किक चिंतन करने की क्षमता आती है। ऐसे व्यक्ति वैज्ञानिक अभिक्षमता रखते हैं और आंकिक व अमूर्त समस्याओं को हल करने में अच्छे होते हैं। वैज्ञानिकों में यह बुद्धि उच्च स्तर की होती है।
- 4) **स्थानिक बुद्धि** : यह बुद्धि व्यक्ति की दृश्य संबंधी कल्पना या मानसिक कल्पना को प्रयोग करने व जोड़ तोड़ करने की क्षमता से सम्बन्धित है। संचालक, विमान चालक शिल्पकार और चित्रकार में ऐसी बुद्धि पाई जाती है।
- 5) **शारीरिक गतिक बुद्धि** : यह समस्या समाधान एवं उत्पाद के निर्माण के लिए शरीर या वस्तुओं के भागों को नियंत्रित करने व साधने की क्षमता है। फौज में, गुप्त समाचार सूचना विभाग, खिलाड़ी, अभिनेता और नर्तकों में उच्च स्तर की शारीरिक गतिक बुद्धि पायी जाती है।
- 6) **अंतरावैयक्तिक बुद्धि** : अपने खुद के भावों, संवेगों, जरूरतों और अभिप्रेरकों के प्रति सजग होना अंतरावैयक्तिक बुद्धि को दर्शाता है। दार्शनिक और आध्यात्मिक गुरुओं के अन्दर ऐसी बुद्धि उच्च मात्रा में पाई जाती है।
- 7) **अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि** : यह दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों, प्रेरकों और भावों को समझने की क्षमता है। जिन व्यक्तियों में यह बुद्धि उच्च मात्रा में पाई जाती है वे दूसरों के प्रति अपनी समझ का प्रयोग उनके साथ सुखदाई संबंध विकसित करने के लिए करते हैं। परामर्शदाता, राजनेता, अध्यापक, सामाजिक कार्यकर्ता में उच्च मात्रा में अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि पाई जाती है।

बाद में इन्होंने उपर्युक्त प्रकारों में दो और बुद्धि प्रकारों को भी जोड़ा (8) **प्राकृतिक बुद्धि** : यह प्रकृति के विभिन्न रूपों के प्रति संवेदनशील होती है। ऐसे लोग प्रकृति के प्रति संवेदनशील होते हैं और प्रकृति प्रेमी होते हैं। जंगली जीवन जीने वाले और वनस्पति शास्त्र में ऐसी बुद्धि का स्तर उच्च होता है।

प्रत्येक व्यक्ति में उपर्युक्त आठ प्रकार की बुद्धि का एक अनूठा मिश्रण होता है जो वैयक्तिक भिन्नता की व्याख्या करता है। गार्डनर और उनके साथियों के अनुसार बुद्धि का आदर्श पेपर पेंसिल परीक्षण बुद्धि के बहुत से पक्ष को नहीं मापता है जैसे कि अंतर्वैयक्तिक कौशल बुद्धि परीक्षण पर बहुत से विद्यार्थी काफी खराब प्रदर्शन करते हैं लेकिन परिशोधित अंतर्वैयक्तिक कौशलों की वजह से वे महान नेता बन जाते हैं; जो यह दिखलाता है कि गणितीय, शाब्दिक और विश्लेषणात्मक क्षमताओं जिसका मापन बुद्धि परीक्षणों द्वारा किया जाता है, से कहीं ज्यादा अर्थ "बुद्धि" से निकलता है।

8.3.5 कैटेल का बुद्धि सिद्धान्त

रेमंड कैटेल (1963) ने बुद्धि के तरल तत्व एवं ठोस तत्व के विचार को प्रस्तुत किया तरल बुद्धि से तात्पर्य तर्क करने व नई समस्या का हल निकालने की क्षमता से है जिसमें बीते समय के अनुभव से मिले ज्ञान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है बल्कि व्यक्ति समस्या के समाधान के लिए नए तार्किक तरीकों का आविष्कार करता है। ठोस बुद्धि के तात्पर्य कौशलों, ज्ञान व बीते अनुभवों का प्रयोग करने की क्षमता से होता है। इसके अन्तर्गत बौद्धिक रूप से सीखना आता है जो कि एक व्यक्ति अपने जीवन अवधि के दौरान सीखता है। यह बुद्धि व्यक्ति के भाषा ज्ञान एवं सामान्य ज्ञान के रूप में प्रदर्शित होता है।

बाक्स 8.1 : असंज्ञानात्मक बुद्धि : संवेगात्मक बुद्धि एवं सामाजिक बुद्धि

संवेगात्मक बुद्धि

1990, की शुरुआत में जोन मायर और पीटर सालोवी द्वारा सबसे महत्वपूर्ण असंज्ञानात्मक बुद्धि में से एक संवेगात्मक बुद्धि को प्रस्तुत व परिभाषित किया गया। बुद्धि की विवरण पुस्तिका, 2000 में इन्होंने संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित किया कि "सवेग को देखने और प्रकट करने की क्षमता, संवेगों को विचारों में सम्मिलित करना, संवेगों को समझना और खुद के एवं दूसरों के जीवन में संवेगों को निष्क्रिय करना"। यद्यपि मायर और सालोवी द्वारा मनोविज्ञान के क्षेत्र में इस शब्द को प्रस्तुत किया गया परन्तु यह गोलमैन (1995), की सबसे ज्यादा बिकने वाली किताब 'संवेगात्मक बुद्धि' है जिसमें आईक्यू से कहीं ज्यादा ईआई को महत्वपूर्ण बताया गया है।

सामाजिक बुद्धि

दूसरे तरह की असंज्ञानात्मक बुद्धि सामाजिक बुद्धि के रूप में जानी जाती है। थानडाइक (1920) ऐसे पहले मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने इस पद का प्रयोग दूसरे व्यक्ति को समझने और उन्हें समझदारी से संचालित करने के रूप में किया। गोलमैन ने सामाजिक बुद्धि की महत्ता को अंतर्व्यक्तिक संबंधों के लिए बताया। मायर और सालोवी के अनुसार संवेगात्मक बुद्धि, सामाजिक बुद्धि का एक भाग है इसी वजह से बैरन (बैरन, 2006) ने कहा कि ये दोनों शब्द एक दूसरे से जुड़े हुए हैं दोनों ही एक जैसी रचना के घटक हैं। आगे वे अपनी बुद्धि के सिद्धान्त में कहते हैं कि गार्डनर (1983) का व्यक्तिगत बुद्धि के प्रति विचार भी अंतराव्यक्तिक (संवेगात्मक) बुद्धि एवं अन्तर्व्यक्तिक (सामाजिक) बुद्धि का मिश्रण है। उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर वे कहते हैं कि इन दो पदों (एसआई एवं ईआई) को जोड़कर एक पद की रचना करना ज्यादा सही होगा। इस नई रचना को इन्होंने "संवेगात्मक सामाजिक बुद्धि" या ईएसआई का नाम दिया।

बार-ऑन मॉडल के अनुसार "संवेगात्मक सामाजिक बुद्धि, संवेगात्मक एवं सामाजिक गुणों के परस्पर संबद्ध का अनुप्रस्थ काट है। ऐसे कौशल और समन्वयक है जो यह निश्चित करता है कि कितने प्रभावकारी ढंग से हम खुद को समझते और प्रकट करते हैं एवं दूसरों को समझ पाते हैं तथा उनसे खुद को जोड़ पाते हैं और रोज की मांगों का सामना कर पाते हैं"।

8.3.6 पास सिद्धान्त

दास, नागलेरी और कर्बी (1994) द्वारा योजना, ध्यान, समकालीन और क्रमिक सिद्धान्त प्रस्तुत किया गया। जिसे पास सिद्धान्त कहा गया। यह सिद्धान्त मुख्यरूप से चार तरह की क्षमता की बात करता है :

- 1) योजना प्रक्रिया तब महत्वपूर्ण होता है जब व्यक्ति यह निर्णय लेता है कि किसी समस्या का समाधान कैसे करें या किसी कार्य को कैसे करें। इसके अन्तर्गत उद्देश्य को तय करना व प्रतिपुष्टि की जाँच करना आता है।
- 2) ध्यान व्यक्ति को चयनात्मक उद्दीपन को साथ लेने व अन्य को अनदेखा करने के लिए प्रेरित करता है।
- 3) समकालीन प्रक्रिया उद्दीपन को पूर्णरूप में देखने में मदद करता है एवं उद्दीपनों को समूह के रूप में जोड़ता है।
- 4) क्रमिक प्रक्रिया उद्दीपनों को विशिष्ट क्रमानुसार व्यवस्थित करती है।

पास प्रतिमान हमें कई संज्ञानात्मक प्रक्रिया, जैसे कि तर्क-वितर्क, कल्पना, भाषा और स्मृति को समझने में मदद करता है।

8.3.7 तकनीकी बुद्धि का सिद्धान्त

हमारी बुद्धि को निर्धारित करने में संस्कृति का भी महत्वपूर्ण असर पड़ता है। वार्डगॉटस्की

ने सामाजिक सांस्कृतिक कारकों की भूमिका को जीने के लिए, बढ़ने के लिए एवं अपने आस पास की दुनिया को समझने के लिए महत्वपूर्ण माना। इस प्रकार वार्डगॉटस्की ने इस विचार को सामने रखा कि संस्कृति बौद्धिक विकास को प्रभावित करती/बढ़ाती है। उच्च स्तर के मानसिक कार्य संस्कृति द्वारा निर्धारित होते हैं। तकनीकी बुद्धि ऐसी बुद्धि है जो विकसित देशों के लोगों के बीच पाई जाती है। ऐसी बुद्धि ध्यान, प्रेक्षण, विवेचना, प्रदर्शन, गति और उपलब्धि अनुकूलन के कौशलों के रूप में प्रकट होती है।

8.3.8 अविभाज्य बुद्धि का सिद्धान्त

जब हम भारतीय दृष्टिकोण से बुद्धि की बात करते हैं तो बुद्धि को एक अविभाज्य घटक के रूप में देखा जाता है। जैसा कि नाम से ही पता चल रहा है कि यह बुद्धि का पूर्णतावादी दृष्टिकोण है जो संज्ञानात्मक तथा असंज्ञानात्मक दोनों को मिश्रित व अविभाज्य करता है (श्रीवास्तव एवं मिश्रा, 2007)। इस प्रकार अविभाज्य बुद्धि का मुख्य घटक संज्ञानात्मक क्षमता, सामाजिक क्षमता, संवेगात्मक क्षमता और उद्यम संबंधी क्षमता को माना गया। बौद्धिक विकास में आनुवंशिक और वातावरणीय कारक दोनों ही अपनी भूमिका निभाते हैं। श्री अरविन्दों के अनुसार बुद्धि का अन्तिम उद्देश्य एक ऐसा प्रत्यक्ष ज्ञान है जो बिना किसी इंद्रिय मध्यस्थता के उत्पन्न है और इसलिए यह ज्ञान अहंकार से उत्पन्न विकृति के बगैर होता है (बरल और दास, 2004)।

बोध प्रश्न 2

1) बुद्धि का द्विकारक सिद्धान्त क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) बुद्धि के त्रिपदीय सिद्धान्त की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) ठोस और तरल बुद्धि से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) अविभाज्य बुद्धि एवं तकनीकी बुद्धि में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

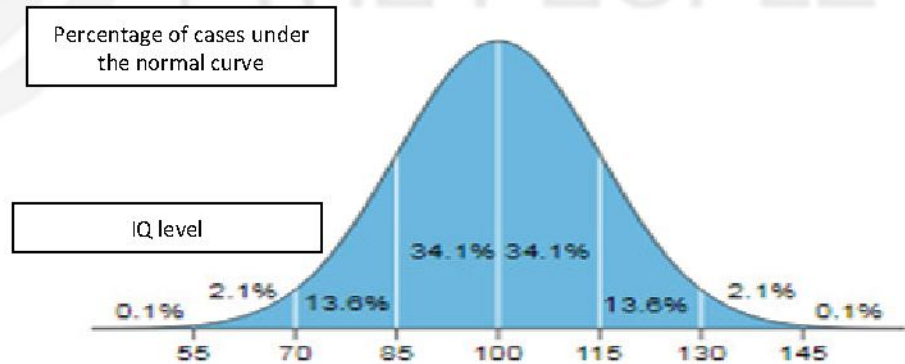
8.4 बुद्धि की माप

अल्फ्रेड बिने और थिडोर सिमोन ने सबसे पहले बुद्धि को वैज्ञानिक तरीके से मापने का प्रयास किया। 1905 में इन्होंने बिने साइमन बुद्धि मापनी नामक पहला बुद्धि परीक्षण विकसित किया। बाद में 1908 में इन्होंने मानसिक आयु पद का प्रयोग व्यक्ति के अपने ही समान आयु के समूह एवं कालानुक्रमिक आयु, जो कि व्यक्ति के शारीरिक उम्र से संबंध रखती है, में तुलना करने के लिए किया। बिने के अनुसार यदि किसी बच्चे का एमए उसके सीए से अधिक है तो ऐसा बच्चा प्रतिभाशाली कहलाएगा। यदि बच्चे का एमए प्राप्तांक उसके सीए से कम आता तो ऐसा बच्चा बौद्धिक रूप से दुर्बल कहलाएगा।

1912 में विलियम स्टर्न ने बुद्धि लब्धि (आईक्यू) के संप्रत्यक्ष को प्रस्तुत किया। यह एमए को सीए से भाग देने पर व 100 से गुणा करने पर प्राप्त होता है।

$$IQ = (MA/CA) \times 100$$

यदि एमए, सीए के बराबर है तब व्यक्ति का आईक्यू 100 होगा, यदि व्यक्ति का एमए, सीए से कम है तब व्यक्ति का आईक्यू 100 से कम होगा।



चित्र 8.5: आई क्यू का सामान्य वितरण कर्व में वितरण

स्रोत: <https://commons.wikimedia.org/>

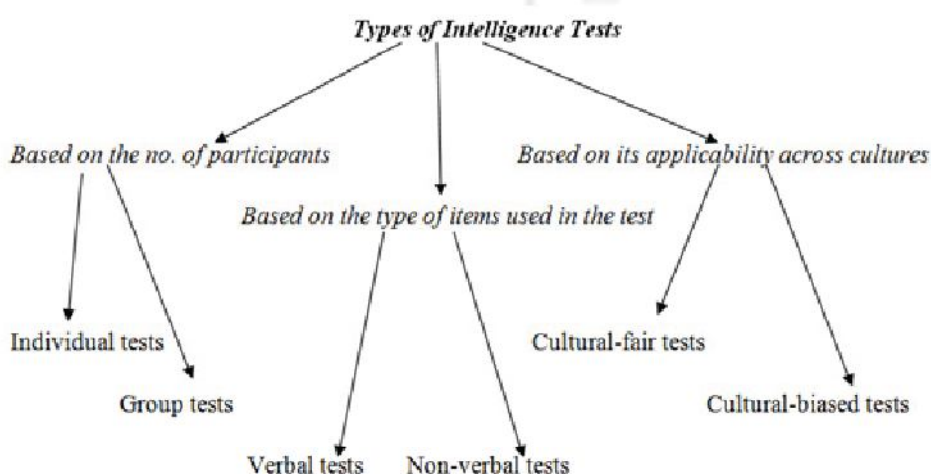
इस सामान्य वितरण कर्व (चित्र 8.5) में निम्नलिखित प्राप्तांक विभिन्न स्तर की बौद्धिक क्षमताओं को प्रकट करते हैं।

आईक्यू श्रेणी	वर्णनात्मक पद
130 के ऊपर	बहुत श्रेष्ठ बुद्धि (प्रतिभाशाली)
120 से 129	श्रेष्ठ बुद्धि
110 से 119	सामान्य से उच्च बुद्धि

90 से 109	सामान्य बुद्धि
80 से 89	सामान्य बुद्धि से निम्न
71 से 79	बौद्धिक कार्य करने की सीमारेखा
55 से 70	मन्द बौद्धिक अशक्तता
40 से 54	मध्यम बौद्धिक अशक्तता
25 से 39	तीव्र बौद्धिक अशक्तता
25 के नीचे	गम्भीर बौद्धिक अशक्तता

8.4.1 बुद्धि परीक्षण के प्रकार

बुद्धि परीक्षण का वर्गीकरण कई मानदंडों के आधार पर किया गया है, जैसे कि परीक्षण में शामिल होने वाले भागीदारों की संख्या के आधार पर, परीक्षण में प्रयोग होने वाले पद के आधार पर एवं सांस्कृतिक प्रभावित व अप्रभावित मानदंड के आधार पर। चित्र 8.6 बुद्धि परीक्षण के वर्गीकरण को प्रस्तुत करता है।



चित्र 8.6: बुद्धि परीक्षण के प्रकार

8.4.1.1 वैयक्तिक और समूह बुद्धि परीक्षण

अ) वैयक्तिक परीक्षण

वैयक्तिक परीक्षण वैसे परीक्षण होते हैं जो एक समय में एक ही व्यक्ति पर कार्यान्वित किए जाते हैं। कई प्रकार के आदर्श वैयक्तिक परीक्षण हैं जैसे कि कॉफमैन मापनी, स्टैनफोर्ड बिनेट मापनी और वेसलर बुद्धि मापनी। यहाँ दो प्रसिद्ध बौद्धिक परीक्षण की चर्चा की जा रही है। (i) स्टैनफोर्ड बिनेट परीक्षण और वेचस्लेर बुद्धि परीक्षण।

बुद्धि का स्टैनफोर्ड-बिनेट मापनी

बिनेट साइमन बुद्धि परीक्षण पहला बुद्धि परीक्षण है जो कि बिनेट और साइमन (1905) द्वारा विकसित किया गया। मनोवैज्ञानिकों के बीच यह अत्यन्त लोकप्रिय परीक्षणों में से एक है। बाद में इस परीक्षण को कई बार संशोधित किया गया और अमेरिकन मनोवैज्ञानिक लेविस एम टेरमन, जो कि स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में कार्यरत थे, के द्वारा रूपान्तरिक किया गया। अमेरिकन जनसंख्या पर प्रमाणित करने के पश्चात इन्होंने मापन के मूलरूप का फिट से

नामकरण करते हुए 'स्टैनफोर्ड बिनेट मापनी' कर दिया। 2003 में स्टैनफोर्ड बिनेट मापनी का पाँचवा प्रकाशन (SB5) हुआ जिसमें, 10 उपपरीक्षण, पाँच कारकों का मापन करता है।

- तरल तर्कणा
- ज्ञान
- परिमाणात्मक तर्कणा
- चाक्षुष-स्थानिक संसाधन
- चलन स्मृति

इन 5 (पाँच) कारकों के प्राप्तांक की अपेक्षा एसबी5 दो अलग प्राप्तांक देता है जिसका नाम शाब्दिक आईक्यू एवं अशाब्दिक आईक्यू है। इस परीक्षण में 10 उपपरीक्षण हैं एसबी5 2, साल के बच्चे से लेकर 85 साल तक के आयु वर्ग के लोगों पर प्रयोग किया जा सकता है। 4800 अमेरिकन व्यक्तियों के प्रतिदर्श पर तीन आईक्यू प्राप्तांक की विश्वसनीयता .90 पर पाई गई और उपपरीक्षण की विश्वसनीयता .70 से .85 पर पाई गई (रोइड, 2002)।

बाक्स 8.2: स्टैनफोर्ड बिनेट परीक्षण का इतिहास

बिनेट परीक्षण एक ऐसा मानकीकृत बुद्धि परीक्षण है जो कि मनोवैज्ञानिकों के बीच में इसकी उपयोगिता की वजह से काफी लोकप्रिय रहा है। मनोवैज्ञानिक अलफ्रेड बिनेट के द्वारा साइमन जो कि उनके विद्यार्थी थे, की सहायता से बिनेट-साइमन परीक्षण विकसित किया गया। बिनेट को फ्रेंच सरकार के द्वारा एक ऐसे परीक्षण के निर्माण का भार सौंपा गया जो मानसिक रूप से दुर्बल बच्चों की पहचान कर सके। इस जिम्मेदारी के चलते 1905 में बिनेट-साइमन मापनी के नाम से जिस बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया गया उसका प्रयोग सभी मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया जाने लगा लेकिन जल्द ही 1908 में इसका प्रथम संशोधन किया गया। विभिन्न मानसिक अस्पतालों व उपचा ग्रहों में इसका प्रयोग किया जाने लगा था।

एल.एम.टरमैन द्वारा 1916 में इस परीक्षण का सबसे महत्वपूर्ण संशोधन किया गया। जिसे स्टैनफोर्ड बिनेट परीक्षण के नाम से जाना गया। यह संशोधन स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में किया गया था। इस संशोधन में सबसे पहले बुद्धि-लब्धि है।

वेक्सलर बुद्धि मापनी

डा. डेविड वेचस्लेर द्वारा 8 मापनी का विनिर्माण किया गया। इन्होंने 3 मापनी विकसित कीं : एक वयस्कों के लिए, एक विद्यालय जाने वाले बच्चों के लिए, एक शिशु विद्यालय के लिए। इन तीन मापनी में कई तरह के उपपरीक्षण शामिल हैं जो शाब्दिक व अशाब्दिक/क्रियात्मक क्षेत्रों से लिए गए हैं एवं ये बुद्धि और संज्ञानात्मक क्षमताओं का मापन कर सकते हैं। इन्होंने अपना पहला परीक्षण (वेक्सलर वेलेम्यू बुद्धि मापनी, 1939 में विकसित किया जब वह वेलेश्यू अस्तपताल में कार्यरत थे। इन्होंने अपनी मापनी से आईक्यू ज्ञात करने के लिए नई विधि को इजाद किया। जैसा कि हम जानते हैं कि आईक्यू ज्ञात करने की प्रचलित/सामान्य विधि निम्न है :

$$\text{आईक्यू} = (\text{मानसिक आयु} / \text{शारीरिक आयु}) \times 100$$

वेक्सलर के अनुसार

$$\text{आईक्यू} = \text{प्राप्तांक} / \text{प्रत्याशित मध्यमान अंक}$$

बाक्स 8.3: वेचस्लेर के बारे में

वेक्सलर का जन्म 12, जनवरी 1896 को रोमानिया में हुआ था। ये एक मनोवैज्ञानिक थे। इन्होंने कोलम्बिया विश्वविद्यालय से अपनी पढ़ाई की एवं फौजियों के स्मृति क्षय पर अपना अध्ययन कर रहे थे। अध्ययन के दौरान कुछ चीजों को लेकर उनकी उत्सुकता ही उनके मरीजों की बुद्धि मापन के निर्माण की वजह बनी। बाद में बच्चों के बुद्धि मापन पर इन्होंने कार्य करना शुरू कर दिया। इन्होंने पाया कि आनुवंशिकता के साथ साथ वातावरणीय कारक भी व्यक्ति की बुद्धि को प्रभावित करता है। इन्होंने महसूस किया कि एक ही परीक्षण सभी उम्र के लोगों के लिए उपयुक्त नहीं होगा। यही वजह थी कि इन्होंने पूरी एक शृंखला का निर्माण किया जो अलग-अलग उम्र के लोगों की बुद्धि का मापन कर सके।



चित्र 8.6: डेविड वेचस्लेर

स्रोत: [https://](https://wechsleriqtest.com/#)wechsleriqtest.com/#

वेक्सलर के बुद्धि मापनी का तीन संस्करण है जो कि निम्नलिखित हैं:

- i) **WPPSI - बुद्धि का वेचस्लेर शिशु विद्यालय एवं प्राथमिक मापनी** : यह मापनी 2 साल 6 महीने से 7 साल 7 महीने तक के बच्चों पर संचालित की जा सकती है। 1967 में यह मापनी विकसित की गई थी जो कि 4 से 6.5 साल तक के बच्चों के लिए बनाया गया था। इसके अन्तर्गत 14 उपपरीक्षण आते हैं जो कि तीन तरह की सूची तालिकाओं अर्थात् शाब्दिक, क्रियात्मक और पूर्ण मापनी आईरक्यू का मापन करता है। वर्तमान समय में इसका चौथा संशोधित रूप WPPSI IV मौजूद है।
- ii) **WISC - बच्चों के लिए वेचस्लेर बुद्धि मापनी** - यह मापनी 6 से 16 उम्र तक के बच्चों पर संचालित किया जा सकता है। यह परीक्षण वेक्सलर वेलेम्यू बुद्धि मापनी से विकसित किया गया था जो कि 1949 में सबसे पहले प्रस्तुत हुआ था। यह परीक्षण खास बच्चों व सीखने में मुश्किल महसूस करने वाले बच्चों को पहचानने के उद्देश्य से विद्यालयों व इसके शैक्षिक संस्थानों में अक्सर प्रयोग किया जाने लगा। इस परीक्षण का सबसे नया संशोधन i) **WISC -V** है जो कि 2014 में प्रकाशित हुआ।
- iii) **WAIS - वेचस्लेर वयस्क बुद्धि मापनी** - यह मापनी 16 साल के किशोर से वयस्क बच्चों तक की सामान्य बुद्धि को मापने के लिए है। जिसमें कई उपपरीक्षणों को वितरित किया जाता है। प्रत्येक उप परीक्षण बुद्धि का सूचक और अनुमानक होता है। परीक्षण का सबसे नया संशोधन **WAIS - IV** है जो कि 2008 में प्रारंभ हुआ।

वेचस्लेर बुद्धि मापन का आधुनिक संस्करण जो कि भारत में प्रयोग किया जाता है वह वेचस्लेर वयस्क बुद्धि मापनी चौथा संस्करण, भारत (WAIS-IV, INDIA), बुद्धि का वेक्सलर एब्रो विएटेड मापनी दूसरा संस्करण, भारत (WASI-II INDIA), वेचस्लेर स्मृति मापनी-तीसरा संस्करण, भारत (WASI-III INDIA) है।

WASI-IV INDIA : वयस्क एवं किशोरों की संज्ञानात्मक क्षमता को मापने का यह आधुनिक मापन है। इसमें कई उपपरीक्षण और मिश्रित प्राप्तांक होते हैं जो कि विशिष्ट संज्ञानात्मक क्षेत्र के साथ ही साथ सामान्य मानसिक क्षमता की मिश्रित गणना में प्रयोग किये जाने वाले बौद्धिक कार्य को प्रस्तुत करता है (full scale IQ)। यह सीखने में समस्या होने व प्रतिभाशाली को मापने में भी प्रयोग होता है। यह अत्यंत विश्वसनीय व वैध उपकरण है।

ब) समूह परीक्षण

समूह परीक्षण वैसे परीक्षण होते हैं जो एक से ज्यादा व्यक्तियों पर एक ही समय में

कार्यान्वित किए जा सकते हैं। इस प्रकार इस परीक्षण के द्वारा कम से कम समय में ज्यादा लोगों का मापन किया जा सकता है। ऐसे कई प्रकार के परीक्षण हैं जिन्हें समूह परीक्षण के अन्तर्गत रखा जाता है जैसे कि बहुआयामी योग्यता बैटरी (MAB : Jackson, 1984), संज्ञानात्मक क्षमता परीक्षण (Lohman & Hagen, 2001), सांस्कृतिक निष्पक्ष बुद्धि परीक्षण (1940) और रावेन का प्रोगरेसिव मैट्रिसेस (1938, 1992)। उदाहरण के रूप में यहाँ पर केवल रेवेन का प्रोगरेसिव मैट्रिसेस (RPM) प्रस्तुत किया जा रहा है।

रेवेन का प्रोगरेसिव मैट्रिसेस (RPM)

जॉन सी रावेन (John C. Raven) द्वारा 1983 में RPM को विकसित किया गया। यह विवेचनात्मक तर्क का एक अशाब्दिक परीक्षण है जो कि सामान्य बुद्धि पर स्पीयरमैन के जी कारक को मापने के लिए बनाया गया है। इसमें 60 बहुविकल्पीय पद हैं जो 5 साल से प्रौढ़ अवस्था के बच्चों पर क्रियान्वित किए जा सकते हैं। इस परीक्षण में दृश्य ज्यामितिक प्रारूप कुछ गायब हिस्सों के साथ होते हैं और परीक्षण के भागीदार को 6 से 8 मौजूद विकल्पों में से इसी गायब हिस्से को चुनना होता है। रेवेन द्वारा परीक्षण के तीन अलग प्रकार की विधियों का निर्माण किया गया। आदर्श क्रमिक परीक्षण, रंगीन क्रमिक परीक्षण और विकसित क्रमिक परीक्षण। एसपीएम 6 से 80 साल तक के सामान्य व्यक्तियों के लिए अनुकूल है। सीपीएम बड़े बच्चों के लिए और वैसे खास समूह जिनका परीक्षण एसपीएम में नहीं हो सकता, के लिए उपयोगी है। एपीएम किशोरों व प्रौढ़ों के लिए लाभदायक है।

8.4.1.2 शाब्दिक और अशाब्दिक परीक्षण

अ) शाब्दिक परीक्षण

शाब्दिक बुद्धि भाषा आवरित तर्कणा द्वारा समस्या समाधान करने व इसको प्रयोग करने की क्षमता है। शाब्दिक परीक्षण वह है जिनमें सफलतापूर्वक प्रदर्शन के लिए भाषा के प्रयोग की जरूरत होती है। शाब्दिक बुद्धि भाषा सम्बन्धी समस्या को समझने व इनका समाधान करने की क्षमता है शुरु में, लगभग सभी बुद्धि परीक्षण केवल भाषा पर ही आधारित थे लेकिन बाद में महसूस किया गया कि अनपढ़ लोगों के लिए, ऐसे बच्चे जिनकी भाषा का विकास पूरा नहीं हुआ है एवं वे लोग जो बोलने की समस्या से ग्रसित होते हैं, के लिए ऐसे परीक्षण की उपयोगिता नहीं है। इन शाब्दिक परीक्षणों की कमियों से उबरने के लिए कई मनोवैज्ञानिकों ने अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण का निर्माण किया। ज्यादातर कई शाब्दिक मानकीकृत परीक्षण जैसे कि वेचस्लेर मापनी एवं कॉफमैन परीक्षण अब कुछ अशाब्दिक घटक भी प्रयोग करते हैं।

अशाब्दिक परीक्षण

बुद्धि का अशाब्दिक परीक्षण व्यक्ति की दृष्टि संबंधी सूचनाओं की विवेचना करने व समस्या का समाधान करने की क्षमता को बिना भाषा का प्रयोग किए मापता है। अशाब्दिक परीक्षण को क्रियात्मक परीक्षण भी कहते हैं क्योंकि इसमें अक्सर कुछ आकृति के निर्माण करने की जरूरत होती है। कुछ प्रसिद्ध अशाब्दिक परीक्षण अग्रलिखित हैं : कोह का ब्लाक ढाँचा परीक्षण, क्यूब निर्माण परीक्षण, एवं पास एलांग परीक्षण, रेवेन का प्रोगरेसिव मैट्रिसेस (1938, 1986, 1992, 1995)। एक महत्वपूर्ण अशाब्दिक बुद्धि परीक्षण है जिसकी चर्चा पहले ही की जा चुकी है।

8.4.1.3 संस्कृति निष्पक्ष परीक्षण एवं संस्कृति आधारित परीक्षण

अ) संस्कृति-निष्पक्ष परीक्षण

प्रत्येक संस्कृति अपनी मान्यताओं, भाषा उम्मीदों, माँग और वातावरणीय अनुभव के आधार पर

अनोखे होते हैं। यूएस में पला बढ़ा बच्चा भारत के उपनगरीय क्षेत्र में पहले बढ़े बच्चे से कई तरीकों से अलग होगा। इसी वजह से विभिन्न संस्कृतियों से संबंध रखने वाले व्यक्तियों का मापन करने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने ऐसे परीक्षणों का निर्माण किया जो किसी भी संस्कृति के प्रभाव से स्वतंत्र हो। कुछ प्रसिद्ध संस्कृति निष्पक्ष परीक्षण निम्नलिखित हैं। कैटल का संस्कृति मुक्त परीक्षण (1940), रेवेन प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स (1938), लइटर अन्तराष्ट्रीय क्रियात्मक संशोधित मापनी (1997), ड्रॉ ए मैन टेस्ट (1926)। इन सभी व अन्य संस्कृति मुक्त परीक्षणों का स्वरूप अशाब्दिक है। यहाँ पर संस्कृति निष्पक्ष परीक्षण के उदाहरणों में से ड्रा-ए-मेन परीक्षण की चर्चा की जा रही है।

ड्रा-ए मेन परीक्षण

प्रारंभ में यह परीक्षण गुडइनफ (1926) द्वारा विकसित किया गया जो कि बाद में गुडइनफ और हैरिस द्वारा 1963 में संशोधित किया गया जिसको कि गुडइनफ-हैरिस ड्राइंग परीक्षण के नाम से जाना जाता है। प्रक्षेपी परीक्षण के आधार पर, इस परीक्षण में भागीदार (केवल बच्चे) को तीन चित्र तीन अलग-अलग कागजों पर बनाना होता है। उनसे आदमी, औरत एवं खुद को बिना किसी आगे का निर्देश दिए बनाने को कहा जाता है। यहाँ बच्चों के कलात्मक कौशल के बजाय सही ढंग से देखने एवं धारणात्मक रूप से सोचने की क्षमता पर जोर दिया जाता है।

ब) सांस्कृतिक पक्षपातपूर्ण परीक्षण

कई मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि परीक्षण के स्वरूप को अशाब्दिक बनाकर इसे सांस्कृतिक निष्पक्ष बुद्धि परीक्षण बनाने का प्रयास किया। लेकिन यह महसूस किया गया कि पूरी तरह से अशाब्दिक होने के बावजूद भी इन परीक्षणों से संस्कृति के प्रभाव को पूरी तरह से रोका नहीं जा सका। इसी वजह से इन परीक्षणों के लिए संस्कृति मुक्त के बजाय संस्कृति निष्पक्ष शब्द का प्रयोग किया गया।

8.5 सारांश

अब हम इस इकाई के अन्तिम भाग में पहुँच चुके हैं जहाँ सभी मुख्य बिन्दुओं को संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

- बुद्धि के अन्तर्गत नए उद्दीपनों को समझने की क्षमता, भाषा और दूसरों के साथ संवाद को समझना, वातावरण के प्रति जागरूक होना, तर्क करना, योजना बनाने एवं समस्या को सृजनात्मकता के साथ हल निकालने की क्षमता आती है।
- चार्ल्स स्पीयरमैन ने बुद्धि का “दो कारक सिद्धान्त” प्रस्तुत किया। इन्होंने कारक विश्लेषण और सहसंबंध का प्रयोग बुद्धि के दो महत्वपूर्ण कारक सामान्य “जी” (g) कारक एवं विशिष्ट “एस” (s) कारक को प्रस्तुत किया।
- थर्स्टन के अनुसार बुद्धि सात अलग-अलग मुख्य मानसिक क्षमताओं का मिश्रण है। आधुनिक सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके इन्होंने बुद्धि का एक नया कारक सिद्धान्त विकसित किया। इन कारकों को मुख्य मानसिक क्षमताएँ कहा जाता है।
- हावार्ड गर्डनर ने “बहु बुद्धि का सिद्धान्त” प्रस्तुत किया। इनके अनुसार बुद्धि केवल एक तत्व नहीं है बल्कि इसके अन्तर्गत आठ प्रकार की बुद्धि आती हैं।
- रॉबर्ट जे. स्टर्नबर्ग ने “बुद्धि का त्रिपदीय सिद्धान्त” प्रस्तुत किया जिसमें कहा गया है कि बुद्धिपूर्ण व्यवहार 3 मुख्य घटकों या उप सिद्धान्तों को शामिल करता है। ये

उपसिद्धान्त हैं (1) घटकीय या विश्लेषणात्मक बुद्धि। (2) प्रासंगिक बुद्धि या व्यवहारिक बुद्धि (3) अनुभवात्मक या सृजनात्मक बुद्धि

- कैटल ने ठोरा एवं तरल बुद्धि का सम्प्रत्यय प्रस्तुत किया। दारा, नागलेरी, और किरवी, 1994 द्वारा योजना, ध्यान, समकालीन एवं क्रमिक (pass) सिद्धान्त प्रस्तुत किए गए।
- भारतीय परिदृश्य में बुद्धि को 'सम्पूर्ण बुद्धि' के रूप में जाना जाता है। उच्च क्रम मानसिक क्रिया, सांस्कृतिक रूप से निर्धारित होते हैं। तकनीकी बुद्धि एक ऐसी बुद्धि का प्रकार है जो कि विकसित देशों के लोगों में पाया जाता है।
- बुद्धि का मापन करने के लिए एक से अधिक तरीके मौजूद हैं। बुद्धि परीक्षण को विभिन्न मानदंडों के आधार पर वर्गीकृत किया गया है जैसे कि परीक्षण में भाग लेने वाले सहभागियों की संख्या के आधार पर एवं परीक्षण का विभिन्न संस्कृतियों में प्रयोग हो सकने या ना हो सकने की अवस्था के आधार पर।

8.6 मुख्य शब्द

बुद्धि

: यह व्यक्ति की सम्पूर्ण या व्यापक क्षमता उद्देश्यपूर्ण तरीके से कार्य करने की, तर्क संगत सोचने की एवं वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से सामंजस्य बैढाने की है।

जी कारक

: इसको सामान्य कारक भी कहते हैं यह एक जन्मजात संज्ञानात्मक क्रिया है जो कि अन्य सभी मानसिक क्रियाओं को प्रभावित करती है। यह व्यक्ति के जीवन भर स्थिर रहता है।

एस कारक

: इसको विशिष्ट कारक भी कहते हैं। यह कुछ विशिष्ट या खास मानसिक क्रिया के द्वारा प्रदर्शित होता है। इसको सीखा जा सकता है एवं एक व्यक्ति में एक से अधिक एस कारक हो सकते हैं। यदि हम सभी एस कारक को एक साथ मिलाते हैं तो यह हमारे जी कारक को बनाता है।

मानसिक आयु

: यह व्यक्ति का उसके समूह के संदर्भ में बौद्धिक विकास को मापता है।

ठोस बुद्धि

: यह ऐसी बुद्धि है जो व्यक्ति के उस ज्ञान से बनी होती है जो वह पहले ही सीख चुका होता है और जब कभी इस ज्ञान की जरूरत होती है तब वह इसको प्रयोग कर सकने की क्षमता रखता है।

तरल बुद्धि

: यह बुद्धि का ऐसा प्रकार है जिसका नई परिस्थिति या समस्या के साथ सामंजस्य करने में प्रयोग किया जाता है।

शाब्दिक समझ

: यह शब्द, सम्प्रत्यय, विचार, शाब्दिक तर्कणा, समझने एवं परिभाषित करने एवं धारणा को पढने की क्षमता है।

- स्थानीय संबंध** : यह रिक्त स्थान में विभिन्न ज्यामितिय स्वरूप, एवं काल्पनिक उददीपनों को रूप देने एवं जोड़-तोड़ करने की क्षमता है।
- संवेगात्मक बुद्धि** : यह अपने खुद के व दूसरों की भावनाओं एवं संवेगों को देखने की क्षमता, उनके बीच अन्तर करने एवं प्राप्त सूचना को किसी की सोच और कार्य को निदेशित करने में प्रयोग करने की क्षमता है।

8.7 पुनरावलोकन प्रश्न

- 1) निम्न में से कौन वेसलर द्वारा बुद्धि की दी गई परिभाषा का हिस्सा है
 - क) प्राकृतिक बुद्धि
 - ख) अनुसंकेतक स्मृति
 - ग) वातावरण के साथ प्रभावकारी ढंग से सामंजस्य करने की क्षमता
 - घ) स्थानिक एवं गतिसंवेदी क्षमताएँ
- 2) निम्न में से कौन सा गार्डनर के बुद्धि प्रकार में से एक है।
 - क) प्रबंधक कौशल
 - ख) संगीत
 - ग) नीतिशास्त्र
 - घ) सृजनात्मकता
- 3) वह कौन व्यक्ति है जो पहले उपयोगी वैयक्तिक परीक्षण की रचना करने एवं विकास के लिए जिम्मेदार है।
 - क) फ्रायड
 - ख) टरमन
 - ग) बिने
 - घ) वेचस्लेर
- 4) आई-क्यू अंक का वितरण
 - क) लगभग सामान्य या घंटे के आकार का होता है।
 - ख) यह दिखाता है कि ज्यादातर लोग 80 से 100 के बीच में अंक प्राप्त करते हैं।
 - ग) सामान्य पुरुषों और महिलाओं के लिए औसत में अन्तर का पता चलता है।
 - घ) 100 से ऊपर अचानक गिर जाता है
- 5) बुद्धि को परिभाषित कीजिए।
- 6) बुद्धि पर आनुवंशिक बनाम वातावरण विवाद की विवेचना कीजिए।

- 7) स्पीयरमैन एवं थर्सटन के बुद्धि सिद्धान्त को प्रस्तुत कीजिए।
- 8) बुद्धि के त्रिपदीय सिद्धान्त को समझाइये।
- 9) मानसिक आयु, शारीरिक आयु और आइक्यू में अन्तर बताइये। ये सभी संप्रत्यय एक दूसरे से कैसे जुड़े हैं।
- 10) संस्कृति निष्पक्ष बुद्धि परीक्षण एवं संस्कृति पक्षपातपूर्ण बुद्धि परीक्षणों में अन्तर बताइए?

8.8 संदर्भ एवं पढ़ने के सुझाव

Anastasi, A. & Urbria, S. (2017). *Psychological Testing*. Pearson India Education Services Pvt. Ltd.

Ashton, M. (2013). *Individual Differences and Personality*. Academic Press, U.S.A.

Baron, R. A. & Misra, G (2016). *Psychology*. Indian Subcontinent Edition. Pearson Education. Delhi.

Ciccarelli, S. K and White, J. N. (2015). *Psychology*. New York: Pearson Education Limited.

Boyatzis R.E., Gaskin J., Wei H. (2015) Emotional and Social Intelligence and Behavior. In: Goldstein S., Princiotta D., Naglieri J. (eds) *Handbook of Intelligence*. Springer, New York.

Cattell, R.B. (1963). Theory of fluid and crystalized intelligence: A critical experiment. *Journal of Educational Psychology*, 54, 1-22.

Chamorro-Premuzic, T. (2016). *Personality and Individual Differences*. John Wiley & Sons.

Coon, D., & Mitterer, J. O. (2007). *Introduction to Psychology*. Thompson Wadsworth.

Das, J. P., Naglieri, J. A., & Kirby, J. R. (1994). *Assessment of Cognitive Processes: The PASS Theory of Intelligence*. Massachusetts, Allyn & Bacon, Inc.

Ellis, A., Abrams, M., & Abrams, L. (2009). *Personality Theories: Critical Perspectives*. Sage Publications.

Fogarty, G. J. (1999). Intelligence: theories and issues. In J. Athanasou (Ed.) *Adult Educational Psychology* (pp.183-210) Sydney: Social Science Press.

Gardner, H. (1983). *Frames of Mind: The Theory of Multiple Intelligences*. New York; Basic books.

Goleman, D. (1995). *Emotional Intelligence*. New York, Bantam.

Jensen, A. R. (1969). How much can we boost I.Q. and scholastic achievement? *Harvard Educational Review*, 33, 1-123.

Legg, S., & Hutter, M. (2007). A collection of definitions of intelligence. *Frontiers in Artificial Intelligence and applications*, 157, 17.

Lerner, M. J., Millon, T., & Weiner, I. B. (2003). *Handbook of psychology*, Volume 5: personality and social psychology.

Mayer, J. D., Salovey, P., & Caruso, D. R. (2004). Emotional intelligence: Theory,

findings, and implications. *Psychological Inquiry*, 15, 197-215.

Mayer, J. D., Salovey, P., Caruso, D. R., & Sitarenios, G. (2003). Measuring emotional intelligence with the MSCEIT V2.0. *Emotion*, 3, 97-105.

McGue, M., Bacon, S., & Lykken, D. T. (1993). Personality Stability and Change in Early Adulthood: A Behavioral Genetic Analysis. *Developmental Psychology*, 29, 1; 96-109.

Neisser, U. (1998). *The rising curve: Long-term gains in IQ and related measures*. American Psychological Association. Washington, D.C.

Plomin, R., & DeFries, J. C. (1998). Genetics of cognitive abilities and disabilities. *Scientific American*, 62-69.

Plomin, R., Fulker, D. W., Corley, R., & DeFries, J. C. (1997). Nature, Nurture, and Cognitive Development from 1 to 16 Years: A Parent-Offspring Adoption Study. *Psychological Science*, 8, No. 6; 442-447.

Revelle, W., Wilt, J., & Condon, D. M. (2011). Individual differences and differential psychology. *The Wiley-Blackwell Handbook of Individual Differences*, 1-38.

Scarr, S., & Weinberg, R. A. (1976). IQ test performance of black children adopted by White families. *American Psychologist*. 31; 726-739.

Salovey, P., & Mayer, J. D. (1994). *Final Thoughts About Intelligence*. Cambridge University Press.

Spearman, C. E. (1927). *The Abilities of Man*. London; Macmillan.

Srivastava, A. K. & Misra, G. (2007). *Rethinking intelligence: Culture and Conceptualization of Competence*. New Delhi. Concept.

Sternberg, R. J. (1985). *Beyond IQ*. Cambridge: Cambridge University Press.

Thurstone, E. L. (1938). *Primary Mental Abilities*. Chicago; University of Chicago Press.

Zimbardo, P. G., & Weber, A. L. (1994). *Psychology*. Harper Collins College Publishers.

8.9 चित्रों का संदर्भ

Indian Wonderkids: Priyanshi Somani. Retrieved January 13, 2019, from <https://www.indiatimes.com/culture/who-we-are/indian-wonderkids-with-exceptional-brilliance-priyanshi-somani>

Nature vs. Nurture Debate. Retrieved October 27, 2018, from <https://www.verywellmind.com/what-is-nature-versus-nurture-2795392>

Nativists vs. empiricists take by different approaches of psychology. Retrieved October 27, 2018, from <https://www.simplypsychology.org/naturevsnurture.html>

Normalised distribution of IQ with the mean of 100 and standard deviation 15. Retrieved October 27, 2018, from https://commons.wikimedia.org/wiki/File:IQ_distribution.svg

David Wechsler. Retrieved October 27, 2018, from <https://wechsleriqtest.com/#>

8.10 ऑनलाइन स्रोत

- For more information on Theories of Intelligence, visit
 - <http://www.gcbtcollege.in/studymaterial/Intelligence%20Theories.pdf>
 - <https://scottbarrykaufman.com/wp-content/uploads/2012/09/Kaufman-Kaufman-Plucker-in-press.pdf>
 - <http://www.psych.purdue.edu/~willia55/120/10.IntelligenceMM.pdf>
- For more on Measurement of Intelligence, visit
 - https://psychaanalyse.com/pdf/THE_MEASUREMENT_OF_INTELLIGENCE.pdf
 - <https://journal-archieives26.webs.com/107-124.pdf>
 - http://shodhganga.inflibnet.ac.in/bitstream/10603/46917/6/06_chapter%202.pdf
- For interesting articles on Nature Vs. Nurture debate on Intelligence, visit
 - http://pzacad.pitzer.edu/~dmoore/publications/2013_moore_nature-nurture.pdf
 - <https://pdfs.semanticscholar.org/184d/cab8a5d45c7b2728e570985127c64c7fae81.pdf>
 - <https://www.canford.com/MainFolder/Documents/Prospective-parents/Academic/Blog-posts/Nature-vs-Nurture.pdf>
 - <http://lib.oup.com.au/secondary/science/Psychology/1and2/Oxford-Psych-1and2-Ch8-nature-vs-nurture.pdf>

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1) (c), 2) (d), 3) (c), 4) (a)